कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

● भोपाल मंगलवार 18 से 24 फरवरी 2025 ● वर्ष-25 ● अंक-39 ● पृष्ठ-16 ● मूल्य-13 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र. एम.पी./भोपाल/625/2024-26

गेहूं एमएसपी पर मिलेगा 175 रुपये बोनस

इस साल 2600 रुपये क्विंटल गेहूं खरीदेगी सरकार

भोपाल। प्रदेश सरकार ने रबी सीजन 2025-26 के लिए गेहूं पर केंद्र सरकार द्वारा घोषित एमएसपी 2425 रुपये के ऊपर 175 रुपए का बोनस देने की घोषणा की है। इससे मध्यप्रदेश में गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2600 रुपये प्रति क्विंटल हो गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने देवास के सोनकच्छ में आयोजित एक कार्यक्रम में इसकी घोषणा करते हुए कहा कि सरकार का लक्ष्य हर खेत को पानी और हर किसान को समर्थन देना है। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने सिंगल क्लिक से 81 लाख किसानों के खाते में 1624 करोड़ रुपये की राशि ट्रांसफर की। लाड़ली बहना योजना की 1.27 करोड़ महिलाओं को

1553 करोड़ रुपये वितरित किए। डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में सिंचाई सुविधाओं को मजबूत करने के लिए सरकार विभिन्न जल परियोजनाओं पर कार्य कर रही है। रंजीत सागर परियोजना के तहत आसपास के गांवों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे फसलों की पैदावार में सुधार होने की उम्मीद है। इसके साथ ही, केन-बेतवा लिंक परियोजना और पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक योजना जैसी योजनाओं का भी उल्लेख किया गया, जिनसे राज्य के जल संसाधनों को बेहतर करने का दावा किया जा रहा है।

देश का हर किसान औसतन 74 हजार का कर्जदार

नई दिल्ली। देश में हर किसान परिवार पर औसत 74 हजार रुपये का ऋण बकाया है। केन्द्र सरकार के द्वारा संसद में पेश किये गये उत्तर में यह जानकारी सामने आई है। दरअसल पश्चिम बंगाल की हुगली सीट से तृणमूल कांग्रेस की सांसद रचना बनर्जी ने देश के प्रति किसान ऋण की औसत राशि की जानकारी मांगी थी। इस पर कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर ने कहा कि प्रति कृषक परिवार पर बकाया ऋण की औसत राशि राष्ट्रीय स्तर पर 74,121 रुपये है। सबसे अधिक आंध्रप्रदेश में प्रति परिवार 2,45,554 रुपये का कर्ज है जबकि सबसे कम महाराष्ट्र में 82,085 रुपये का कर्ज है। पूर्वोत्तर के राज्यों की बात करें तो औसत 10,034 रुपये होती है। संघ राज्य क्षेत्रों के समूह में यह आंकड़ा 25,629 रुपये है।

उत्तर और मध्य भारत में तापमान बढ़ने से

गेहूं की फसल प्रभावित होने की आशंका

नई दिल्ली। पिछले कुछ दिनों में तापमान में तेजी से वृद्धि हुई है। दिन का पारा सामान्य से 3 से 6 डिग्री सेल्सियस अधिक दर्ज किया जा रहा है। इससे उत्तर और मध्य भारत के ज्यादातर हिस्सों में गेहूं समेत कई रबी फसलों का उत्पादन प्रभावित होने की आशंका है। मौसम विभाग ने कहा कि तापमान बढ़ने के कारण सरसों और काबुली चने जैसी फसलों के जल्दी पकने की संभावना है।

मौसम विभाग के अनुसार उत्तरी राजस्थान, उत्तरी मध्य प्रदेश, पश्चिमी उत्त प्रदेश, उत्तरी छत्तीसगढ़ और झारखंड आदि के कुछ हिस्सों में तापमान लगातार सामान्य से 5 या इससे अधिक दर्ज किया जा रहा है। इसके अलावा उत्तर-पश्चिमी, मध्य और उससे सटे पूर्वी क्षेत्र में यह सामान्य से 3 से 5 डिग्री अधिक है। उत्तरी प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र में सामान्य से 1 से 3 डिग्री सेल्सियस अधिक चल रहा है।

मौसम विभाग के अनुसार पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, उत्तरी राजस्थान, गुजरात, उत्तर-पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा,

छत्तीसगढ़ में रात के तापमान में भी 1 से 3 डिग्री की वृद्धि हुई है। जबकि मध्यप्रदेश, विदर्भ, आंतरिक महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्रप्रदेश के रायलसीमा में रात के पारे में 1 से 3 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आई है। भारतीय मौसम विभाग ने कहा कि सामान्य से अधिक तापमान रहने से उत्तरी-पश्चिमी और मध्य भारत में प्याज, लहसुन और टमाटर जैसी फसलें प्रभावित हो सकती हैं। इस समय फसलों में फूल आने का समय होता है और तापमान बढ़ने से इनके जल्दी पकने या फूल सूखने की आशंका बढ़ जाएगी जिसका सीधा असर फसल उत्पादन पर पड़ सकता है।

यही नहीं, गर्म मौसम का असर पालतू पशुओं पर भी पड़ता है और उन्हें अधिक देखभाल की जरूरत पड़ेगी। साथ ही उनके चारे में भी मौसम अनुकूल बदलाव करना होगा। बदलते मौसम को देखते हुये मौसम विभाग ने किसानों को फसलों में सिंचाई आदि के लिये सावधानी बरतने की सलाह दी है। उल्लेखनीय है कि इस साल देश भर में 661 लाख हेक्टेयर में रबी फसलों की बुवाई की गई है जो गत वर्ष की बुवाई 651.23 लाख हेक्टेयर से अधिक है। गेहूं की बुवाई 324.18 लाख हेक्टेयर में की गई है जो पिछले साल की बुवाई 318.33 लाख हेक्टेयर से 2 प्रतिशत अधिक है। धान उत्पादक क्षेत्रों में जहां गेहूं की बुवाई दिसंबर में की गई है वहां गेहूं के उत्पादन पर विपरीत असर पड़ने की आशंका है।

मप्र में भी हो सकता है गेहूं उत्पादन प्रभावित

भोपाल। इस साल फरवरी महीने से तापमान जल्दी बढ़ने से देश के प्रमुख गेहूं उत्पादक राज्य मध्यप्रदेश में भी गेहूं उत्पादन प्रभावित होने की आशंका बढ़ गई है। चालू रबी सीजन में प्रदेश में 94 लाख हेक्टेयर में गेहूं की बुवाई की गई है जो पिछले साल की गेहूं बुवाई से अधिक है। प्रदेश में लगभग 38 प्रतिशत क्षेत्र का गेहूं जिसका रकबा 36 लाख हेक्टेयर है, दिसंबर में बोया गया है। धान की कटाई के पश्चात बोये गये गेहूं की अवधि अभी मात्र डेढ़ से दो माह की हुई है। गेहूं की अच्छी बढ़वार एवं पैदावार के लिये 90 दिनों तक 20 डिग्री से नीचे तापमान की जरूरत होती है। वर्तमान में अधिकांश धान उत्पादक क्षेत्रों में दिन का तापमान 30 डिग्री से ऊपर एवं रात का 15 के ऊपर चल रहा है। ऐसी स्थिति में गेहूं का भरपूर उत्पादन मिलना मुश्किल है। प्रदेश के मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र में जहां अक्टूबर-नवंबर मे गेहूं बोया गया है, अच्छे उत्पादन की उम्मीद है।

मप्र बनेगा ड्रोन निर्माण हब : डॉ. यादव

ड्रोन संवर्धन एवं उपयोग नीति को मंजूरी

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश को ड्रोन निर्माण और प्रौद्योगिकी का प्रमुख हब बनाने के लिए समग्र कार्य योजना तैयार की गई है। राज्य सरकार ने ड्रोन क्षेत्र में निवेश आकर्षित करने के लिये मध्यप्रदेश ड्रोन संवर्धन एवं उपयोग नीति-2025 को स्वीकृति दे दी है। इसमें ड्रोन के सुरक्षित और कुशलतम उपयोग के माध्यम से नवाचार, आर्थिक समृद्धि और रोजगार को बढ़ावा देने वाले विषयों एवं तथ्यों को शामिल किया गया है। मध्यप्रदेश में ड्रोन टेक्नोलॉजी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए जल्द ही ड्रोन डेटा रिपॉजिटरी भी बनाई जायेगी। प्रधानमंत्री गति शक्ति पहल से प्रेरित होकर ड्रोन नीति सरकार के ड्रोन डेटा और इमेजरी के लिए एक केन्द्रीकृत प्लेटफॉर्म होगा।

भविष्य में ड्रोन का उपयोग तेज़ी से बढ़ेगा। यह बिना पायलट वाला यंत्र है जो विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है। यह कई प्रकार से अभिनव समाधान प्रस्तुत करता है और मानव श्रम की बचत करता है। इस तकनीकी से समय पर डेटा संधारित हो जाता है। सटीक और दक्षता के साथ कठिन स्थानों से डेटा संग्रह हो जाता है। आधुनिक प्रौद्योगिकी के उपयोग से कई क्षेत्रों के लिए यह अमूल्य उपकरण साबित हो रहा है।

ड्रोन से फसल की सेहत की निगरानी, रोगों का पता लगाने और फसल की पैदावार का मूल्यांकन करने में सहायता मिल रही है। ड्रोन उर्वरक और कीटनाशक का छिड़काव सटीकता से कर सकते हैं, जिससे अपशिष्ट और नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव कम होगा। वे उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जिन्हें अधिक या कम पानी की आवश्यकता है। सिंचाई के तरीकों का बेहतर उपयोग करने में ड्रोन मदद करता है।

ड्रोन, आपदा प्रभावित क्षेत्रों में थर्मल इमेजिंग और हाई-रिजोल्यूशन कैमरों का उपयोग कर प्रभावित लोगों का पता लगा रहे हैं। प्रभावित क्षेत्रों की विस्तृत तस्वीरें देख बचाव के प्रयासों में मदद कर रहे हैं। पुनर्निर्माण के प्रयासों और बीमा दावों की प्रामाणिकता में मदद मिल रही है। आपातकालीन स्थितियों में ड्रोन चिकित्सा आपूर्ति और खाद्य सामग्री को दुर्गम इलाको में पहुंचा रहे हैं।

नई तकनीक और सहकारिता से होगा किसानों का उत्थान : श्री सारंग

कृषि क्रांति 2025 एफपीओ कॉन्क्लेव में किसान कृषि रत्न से सम्मानित

भोपाल। सहकारिता मंत्री विश्वास सारंग ने कहा है कि नई तकनीक और सहकारिता से किसानों का उत्थान होगा। खेत, खलिहान और किसान सरकार की प्राथमिकता है। विकसित भारत की परिकल्पना में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। इन तीनों के उन्नयन और उत्थान की दिशा में सामूहिक रूप से काम करने से ही देश विकसित हो पाएगा, सरकार इस दिशा में प्रयासरत है। मध्यप्रदेश ने कृषि क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इससे प्रोडक्शन में रिकॉर्ड दर्ज किया और 7 बार लगातार कृषि कर्मण अवार्ड भी मिला। श्री सारंग कृषि क्रांति 2025 एफपीओ कॉन्क्लेव को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में 8 एफपीओ और 2 किसानों को कृषि रत्न सम्मान प्रदान किया गया। इनका सम्मान पत्र बांस से तैयार किया गया था। इस मौके पर उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री नारायण सिंह कुशवाह भी उपस्थित थे।

श्री सारंग ने कहा कि मध्यप्रदेश ने कृषि को उन्नत बनाने हर क्षेत्र में काम किया है। किसानों को फसल का सही मूल्य मिल सके, समय पर उपार्जन सहित खाद, बीज, पानी मिल सके इसका ध्यान रखा गया है। उन्होंने कहा कि किसानों को एफपीओ के माध्यम से ऑर्गेनिक खेती से जोड़ना होगा, जिससे उपभोक्ताओं का स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025 में हर पंचायत में पैक्स के माध्यम से सहकार सभा होगी। इसमें भी एफपीओ जोड़कर किसान को सरकार से समृद्धि की ओर ले जा सकते हैं।

उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि एफपीओ और खाद्य प्रसंस्करण को मजबूत बनाना किसानों की आत्मनिर्भरता की कुंजी है।

उन्होंने फसल विविधीकरण और कृषि आधारित उद्योगों को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। श्री कुशवाह ने कहा कि किसान की आय दोगुना करने के लिये चल रहे कार्यों से फसलों का मूल्य अच्छा मिल सकेगा और उसका संवर्धन हो सकेगा।

गौवन्य विहार में पानी और बिजली की व्यवस्था करें : श्री शुक्ल

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने की बसामन मामा गौवन्य विहार के निर्माण कार्यों की समीक्षा

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने रीवा के बसामन मामा गौवन्य विहार अभ्यारण्य में चल रहे निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि वन्य विहार में बिजली की निर्बाध आपूर्ति की व्यवस्था करें। नये विद्युत सब स्टेशन के निर्माण तक बसामन मामा मंदिर के पास के फीडर से कनेक्शन करायें। गौशाला से जुड़ी 17 एकड़ जमीन पर दो गौशाला शेड का इस तरह निर्माण करें की बाउन्ड्रीवाल बनाने की आवश्यकता न रहे। श्री शुक्ल ने बसामन मामा गौवन्य विहार के निर्माण कार्यों की वृहद समीक्षा की।

श्री शुक्ल ने नाले में दो स्टापडैम सह रपटा निर्माण का स्टीमेट तैयार करने के निर्देश दिये। स्टापडैमों के निर्माण से गौशाला में पानी की व्यवस्था के साथ चारागाह विकास की भी सुविधा मिलेगी। उन्होंने माइक्रो सिंचाई परियोजना से पूर्वा तालाब तथा क्षेत्र के अन्य तालाबों में पानी भरने की व्यवस्था करने के निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिये। उप मुख्यमंत्री ने पानी पीने के लिए हौज तथा चारा चारागाह की बाउन्ड्रीबाल का निर्माण तत्काल शुरू कराने के लिये कहा। कार्यपालन यंत्री पीएचई दोनों सम्पवेल में 7 दिवस में पानी भरने की व्यवस्था करें।

उप मुख्यमंत्री ने बैठक में वनमंडलाधिकारी को गायों के चरने के वन क्षेत्र में पानी की व्यवस्था करने तथा विभागीय प्लांटेशन में गौशाला की खाद के उपयोग के निर्देश दिए। बैठक में उप संचालक पशु पालन डॉ. राजेश मिश्रा ने बसामन मामा गौ-अभ्यारण्य के कार्यों की जानकारी दी।

श्री शुक्ल ने गौशाला में प्रस्तावित श्री राधा कृष्ण गौ मंदिर के निर्माण स्थल का निरीक्षण किया एवं निर्माण कार्य तत्काल शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने गौअभ्यारण्य का भ्रमण किया। इस अवसर पर पूर्व विधायक के.पी. त्रिपाठी, स्थानीय जन प्रतिनिधिगण तथा विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

नरवाई जलाने पर होगी कार्रवाई : श्री कंषाना

भोपाल। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि पर्यावरण सुरक्षा को देखते हुए नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के निर्देशों के अंतर्गत प्रदेश में फसलों विशेषत: धान एवं गेहूं की फसल कटाई उपरांत फसल अवशेषों (नरवाई) को खेतों में जलाये जाने को प्रतिबंधित किया गया है। इस संबंध में जारी निर्देशों के उल्लेघन किये जाने पर संबंधितों के विरूद्ध कार्रवाई की जाएगी। पर्यावरण विभाग द्वारा नरवाई में आग लगाने के विरूद्ध पर्यावरण क्षतिपूर्ति राशि दण्ड का प्रावधान निर्धारित किया गया है।

अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि आवश्यक व्यवस्था बनाकर बेहतर पर्यावरण जन स्वास्थ्य एवं जीव-जन्तुओं की जीवन सुरक्षा प्राथमिकता से करना सुनिश्चित करें। ऐसा कोई व्यक्ति/निकाय/ कृषक जिसके पास 2 एकड़ तक की भूमि है तो उसको नरवाई जलाने पर पर्यावरण क्षति के रूप में 2500 रुपये, 2 से 5 एकड़ तक की भूमि है तो 5 हजार रुपये और 5 एकड़ से अधिक भूमि है तो उसको नरवाई जलाने पर पर्यावरण क्षति के रूप में 15 हजार रुपये प्रति घटना के मान से आर्थिक दण्ड भरना होगा। दण्ड वसूलने के लिये संबंधित व्यक्ति/निकाय/कृषक जिनके द्वारा नरवाई जलाकर पर्यावरण को क्षति पहुंचाई गई है, को उप संचालक कृषि सूचना-पत्र जारी करेंगे। सूचना-पत्र को तामिल कराने की जिम्मेदारी संबंधित क्षेत्र के कृषि विस्तार अधिकारी की होगी।

किसानों व बीज उत्पादकों के लिए बढ़ाई सब्सिडी

स्कीम का लाभ सिर्फ किसानों को मिले : श्री चौहान

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने वीडियो कांफ्रेंसिंग से एक महत्वपूर्ण बैठक ली, जिसमें समीक्षा करते हुए देश के किसानों के हित में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा एवं पोषण मिशन के दिशा-निर्देशों में बड़े बदलाव करने की स्वीकृति प्रदान की। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के घटकों में किसानों के हित में परिवर्तन किए गए हैं। मिशन के दिशा-निर्देशों में संशोधन करते हुए किसानों और बीज उत्पादकों के लिए सब्सिडी बढ़ाई गई है, वहीं श्री चौहान ने स्पष्ट तौर पर अधिकारियों से कहा कि योजना का लाभ सिर्फ किसानों को मिलना सुनिश्चित किया जाना चाहिए, ऐसा नहीं होना चाहिए कि किसानों के नाम पर अन्य कोई फायदा उठा लें। मिशन के तहत, पारंपरिक-देशी बीज किस्मों का उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रावधान किया गया है, वहीं पंचायत स्तर पर बीज प्रसंस्करण व भंडारण इकाई स्थापित करने की भी श्री चौहान ने मंजूरी दी। उन्होंने आला अफसरों को निर्देश दिए कि पूरी प्रक्रिया पारदर्शी होनी चाहिए ताकि किसानों का भला हो।

बैठक में केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने नई प्रजातियों के प्रदर्शन, प्रमाणित बीज उत्पादन एवं प्रमाणित बीज वितरण के घटकों में किसानों के लिए सब्सिडी बढ़ाने की मंजूरी दी है, साथ ही जलवायु अनुकूल, बायो-फोर्टिफाइड और उच्च उपज देने वाली किस्मों के उत्पादन को प्राथमिकता दी जाएगी। मिशन के सभी प्रावधानों पर डिजिटली मानीटरिंग की जाएगी। कृषि मैपर और साथी पोर्टल की सहायता भी इसमें ली जाएगी। श्री चौहान ने कहा कि स्कीम का फायदा किसानों को पूरी तरह से मिलना सुनिश्चित किया जाएं व स्कीम के केंद्र में किसान ही हों।

इसी तरह, पारंपरिक किस्मों के उत्पादन को बढ़ावा देने का प्रावधान नए दिशा-निर्देशों में करने की स्वीकृति श्री चौहान ने प्रदान की है क्योंकि ये पारंपरिक किस्में फसल विकास, स्थानीय अनुकूलन, पोषण मूल्य व अन्य महत्वपूर्ण विशेषताओं में रणनीतिक महत्व रखती हैं।

इस प्रकार पहचान, सूचीकरण, उनके उत्पादन के मुख्य क्षेत्रों की पहचान, जियोटैगिंग, उनके उत्पादन में वृद्धि, उनके उत्पादों को लोकप्रिय बनाने और उनकी विपणन क्षमता बढ़ाने जैसे समग्र दृष्टिकोण के साथ पारंपरिक किस्मों को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। इसलिए इस घटक में उनके बीज वितरण, उत्पादन, विभिन्न पहलुओं में क्षमता निर्माण व पीपीवीएफआरए व राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण द्वारा पंजीकृत ऐसी किस्मों के बीज बैंक के निर्माण/विकास पर सहायता/प्रोत्साहन का प्रावधान है।

संशोधित दिशा-निर्देशों में ग्राम पंचायत स्तर पर बीज प्रसंस्करण एवं भंडारण इकाई का प्रावधान भी किया गया है। इसके तहत, एसएमएसपी के पूर्ववर्ती घटक अर्थात ग्राम पंचायत स्तर पर बीज प्रसंस्करण एवं भंडारण इकाई को पुनर्जीवित करने की स्वीकृति भी केंद्रीय कृषि मंत्री द्वारा दी गई है, ताकि देशभर के किसानों के आसपास के क्षेत्र में स्थानीय स्तर पर बीज प्रसंस्करण, सफाई, ग्रेडिंग, पैकेजिंग व भंडारण कार्य किया जा सके। गैर पारंपरिक तरीके से आलू बीज उत्पादन के लिए नए घटक के निर्देशों को भी श्री चौहान ने मंजूरी प्रदान की है। वहीं बीज उत्पादन, विधायन, प्रमाणीकरण एवं टेस्टिंग से जुड़ी विभिन्न सरकारी एजेंसियों को दी जाने वाली सहायता में भी वृद्धि की गई है, ताकि वे सशक्त होकर बेहतर कार्य कर सकें। बैठक में केंद्रीय कृषि सचिव देवेश चतुर्वेदी सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश बना : श्री सिंह

किसान क्रेडिट कार्ड योजना का लाभ मछुआरों और किसानों को भी दिया गया

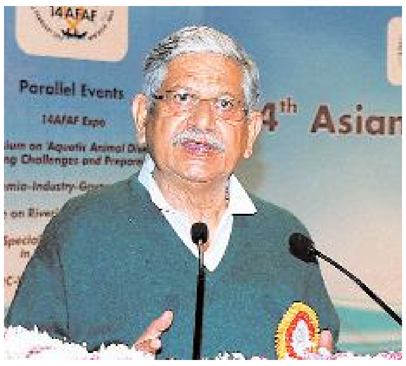

नई दिल्ली। केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी तथा पंचायती राज मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने 14वें एशियाई मत्स्य पालन एवं जलीय कृषि फोरम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री सिंह ने स्थायी मत्स्यपालन के प्रति भारत सरकार की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश बन गया है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि देश समुद्र में मछुआरों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय डिजिटल मत्स्यपालन प्लेटफॉर्म और पोत निगरानी, ट्रांसपोंडर और आपातकालीन सजगता जैसे अत्याधुनिक डिजिटल समाधानों को लागू कर रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि किसान क्रेडिट कार्ड योजना में मछुआरों और मछली पालकों को भी शामिल किया गया है। मत्स्यपालन क्षेत्र के लिए विभिन्न बीमा योजनाएं भी शुरू की गई हैं।

श्री सिंह ने देश में मत्स्यपालन विकास में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के योगदान को मान्यता देते हुए इसकी तकनीकी पेशकशों की सराहना की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शोध संस्थानों को मछुआरों और किसानों द्वारा वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाने में सुधार लाने के लिए केवीके को शामिल करते हुए क्षमता निर्माण पहल करनी चाहिए। उन्होंने 14 एएफएएफ एक्सपो का भी उद्घाटन किया, जो एक प्रमुख आकर्षण था, जिसमें राज्य मत्स्य पालन विभागों, शिक्षाविदों, शोध संस्थानों और उद्योग के हितधारकों को तकनीकी प्रगति का प्रदर्शन करने के लिए एक साथ लाया गया।

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव और आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा 75 नई मत्स्य पालन प्रौद्योगिकियां और उन्नत मछली किस्में विकसित की गई हैं, जो दीर्घकालिक उद्योग लचीलेपन के लिए स्थायी, कार्बन-तटस्थ मत्स्य पालन और जलीय कृषि के प्रति भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की प्रतिबद्धता पर बल देती हैं। मत्स्यपालन विभाग के सचिव डॉ. अभिलक्ष लिखी ने सरकार की परिवर्तनकारी पहलों, पर्याप्त निवेश और भारत की नीली अर्थव्यवस्था के लिए नवाचार को बढ़ावा देने में स्टार्टअप की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। वर्ल्डफिश, मलेशिया के महानिदेशक डॉ. एस्साम यासीन मोहम्मद ने मत्स्य पालन में वैश्विक नवाचारों पर बात की और स्थायी जलीय कृषि में परिवर्तनकारी पहल के लिए भारत की सराहना की। एशियाई मत्स्य पालन सोसायटी, कुआलालंपुर के अध्यक्ष प्रोफेसर नील लोनेरागन ने वैश्विक स्तर पर मत्स्य पालन क्षेत्र को आगे बढ़ाने में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के महत्व पर बल दिया।

अब सैटेलाइट से होगा नुकसान का सही आकलन

नई दिल्ली। किसानों को समय पर और पारदर्शी बीमा दावों का लाभ दिलाने के लिए केंद्र सरकार ने उपग्रह तकनीक आधारित फसल नुकसान आकलन प्रणाली को अपनाया है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने महालनोबिस राष्ट्रीय फसल पूर्वानुमान केंद्र (एमएनसीएफसी) के माध्यम से रिमोट सेंसिंग डेटा और अन्य तकनीकों के उपयोग पर एक पायलट अध्ययन किया था, जिसके बाद खरीफ 2023 से धान और गेहूं की फसलों के लिए 'यस-टेक' (टेक्नोलॉजी-बेस्ड यील्ड एस्टीमेशन सिस्टम) लागू किया गया।

अब तक फसल नुकसान के आकलन के लिए परंपरागत फसल कटाई प्रयोग (सीसीई) किए जाते थे, लेकिन इसमें समय ज्यादा लगता था और कई बार पारदर्शिता को लेकर सवाल उठते थे। नए मॉडल में सीसीई के साथ-साथ तकनीक-आधारित उपज आकलन को भी अपनाया गया है। इसके तहत 30 प्रतिशत भारांश 'यस-टेक' आधारित उपज आकलन को दिया जाएगा, जिससे गणना ज्यादा सटीक और तेज होगी। रिपोर्ट के मुताबिक खरीफ 2023 में सभी राज्यों ने यस-टेक का उपयोग कर फसल बीमा दावों की गणना की और अब तक किसी भी हितधारक से कोई विवाद सामने नहीं आया है। इस प्रणाली को पारदर्शी और प्रभावी बताया गया है, जिससे किसानों को समय पर मुआवजा मिलने की संभावना बढ़ गई है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

साप्ताहिक सुविचार

योग आत्मा की शांति और आनंद की अविचल स्थिति है।
– स्वामी रामदास

बदहाल कृषि शिक्षा और अनुसंधान

कृषक दूत सम्पादकीय

मध्यप्रदेश में वर्तमान में कृषि शिक्षा और अनुसंधान की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। यह स्थिति तब है जब देश के केन्द्रीय कृषि मंत्री मध्यप्रदेश के हैं। कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जो प्रदेश के 18 वर्ष मुख्यमंत्री रहे हैं, उन्हें कृषि शिक्षा और अनुसंधान की दुर्दशा सब कुछ पता है। इस समय कृषि अनुसंधान बजट के अभाव में पूरी तरह बंद है। किसानों को कृषि का नवाचार बताने वाले हर जिले में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र बंद होने की कगार पर हैं। पिछले एक साल से कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को वेतन नहीं मिला है। इन कर्मचारियों के लिये जीवन यापन करना मुश्किल हो गया है। ये वही कर्मचारी हैं जिनकी बदौलत मध्यप्रदेश को 7 बार कृषि कर्मण अवार्ड मिल चुका है। गेहूं,चना, सोयाबीन इत्यादि के उत्पादन से प्रदेश शीर्ष स्थान पर पहुंचा है। इसका सारा श्रेय इन कृषि वैज्ञानिकों एवं केव्हीके के कर्मचारियों को जाता है। केन्द्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न जनहितैषी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने वाले ये केव्हीके कर्मचारी अपना अस्तित्व बचाने के लिये जंग लड़ रहे हैं। सांसदों एवं विधायकों तक को ज्ञापन देकर अपनी समस्यायें सरकार तक पहुंचा चुके हैं। इसके बावजूद भी समस्या सुलझने के बजाय उलझती जा रही है। यही स्थिति प्रदेश में कृषि शिक्षा की है। दोनों कृषि विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 13 कृषि एवं 2 उद्यानिकी महाविद्यालयों में शैक्षणिक संवर्ग के प्राध्यापकों के 50 प्रतिशत से अधिक पद खाली हैं। राजनीतिक विवशता के रहते खोले गये नये कृषि महाविद्यालय जैसे पन्ना, खुरई, छिंदवाड़ा में शैक्षणिक कार्य बुरी तरह प्रभावित हैं। यहां पर अन्य महाविद्यालयों के प्राध्यापक एवं समीपस्थ कृषि विज्ञान केन्द्रों के कर्मचारी अध्यापन कार्य करा रहे हैं। दोनों कृषि विश्वविद्यालयों के बार-बार अनुरोध करने के बावजूद भी शासन स्तर पर कोई सुनवाई नहीं हो रही है। अमूमन यही स्थिति अन्य कृषि महाविद्यालयों की भी है। सरकार में उच्च स्तर पर बैठे अधिकारी जानते हुये भी इस संबंध में चुप्पी साधे हुये हैं। किसानों की आमदनी बढ़ाने एवं कृषि विकास दर वृद्धि के लिये कृषि अनुसंधान अत्यधिक जरूरी है। जब तक किसानों को नवीन किस्म प्राप्त नहीं होंगी तब तक उत्पादन बढ़ाना मुश्किल है। इसके अलावा अंधाधुंध किये जा रहे रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों की रोकथाम करके समन्वित एकीकृत प्रबंधन करने की आवश्यकता है। मिट्टी का पुनर्जीवन लौटाने के लिये जैविक एवं प्राकृतिक खेती की नितांत आवश्यकता है। खेती के इन नवाचारों को किसानों तक सिर्फ कृषि अनुसंधान के जरिये पहुंचाया जा सकता है। कृषि अनुसंधान ठप्प होने से भविष्य की खेती एवं खाद्यान्न उत्पादन प्रभावित होने का खतरा लगातार बना हुआ है। सरकार को कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान के ऊपर बजट स्वीकृत कर ध्यान देने की जरूरत है।

प्रमुख सचिव ने हवा-पानी में उग रही फसलें देखी

ग्वालियर। हवा और पानी में उग रहे आलू व सब्जियों को देखने के लिए राज्यपाल के प्रमुख सचिव के.सी. गुप्ता राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय पहुंचे। जहां पर कृषि विश्वनविद्यालय के कुलपति डा अरविंद कुमार शुक्ला ने प्रमुख सचिव को विश्वविद्यालय परिसर का भ्रमण कराया। जिसमें सर्वप्रथम उन्होंने एरोपोनिक यूनिट का भ्रमण किया और हवा में आलू के पौध को देखकर वह आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने कहा कि इस तरह की तकनीक में पहली बार देख रहा हूं। क्योंकि प्रदेश की यह पहली यूनिट है जहां पर एक साथ 6 हजार पौधों की जड़ें हवा में झूल रही हों और इन जड़ों में आलू के बीज लगने लगे हों, यह अद्भुत है। खास बात यह है कि यह कार्य कृषि विद्यार्थियों की मदद से किया जा रहा है। इसके बाद वह हाइड्रोपोनिक यूनिट को देखने पहुंचे। जहां पर पानी में सब्जियां उगाई जा रही थीं। जिसको लेकर उन्होंने कुलपति डॉ. शुक्ला व उनके द्वारा किए जा रहे नवाचारों की प्रशंसा की और उन्होंने कहा कि जिस तरह से कृषि भूमि सिकुड़ती जा रही है उसको देखते हुए इस तरह के नवाचार होना जरूरी हैं। जिससे लोग कम जगह और कम लागत में खेतीबाड़ी कर मुनाफा कमा सकेंगे। हाइड्रोपोनिक यूनिट लोग अपने घर में भी स्थपित कर जैविक पद्धति से सब्जियां उगा सकते हैं।

डॉ. शुक्ला ने बताया कि इस तकनीक से उत्पादन करने के लिए कम जगह और कम लागत की आवश्यकता होती है। इस पर प्रमुख सचिव ने कहा कि जिस तरह से कुलपति द्वारा नवाचार किए जा रहे है वह सराहनीय हैं। उन्हें साधन, संसाधन और आर्थिक रुप से मदद प्रदान की जाएगी। जिससे वह शिक्षा के स्तर को और बेहतर कर सकें। विश्वविद्यालय परिसर में गांव की परिकल्पना पर काम किया जा रहा है। जिसमें एक गांव और उसमें जैविक तालाब, बाग, बगीचा, कच्चा घर और टेड़े-मेड़े रास्तों को प्रमुख सचिव ने देखा। जिसको लेकर उन्होंने कहा कि जैविक तालाब का मॉडल जिस तरह से तैयार किया जा रहा है यदि यह किसान अपने खेत पर अपनाते हैं तो वह व्यवसायिक खेती आसानी से कर सकेंगे और अपना उत्पादन बढ़ा सकेंगे। डॉ. शुक्ला ने बताया कि गांव का माडल तैयार करने के पीछे उनका उद्देश्य कृषि विद्यार्थी गांव के परिवेश को नजदीक से देख सकें जिससे उन्हें शोध कार्य करने में आसानी हों। इसके साथ पर्यटन को भी बढ़ावा मिले।

उन्होंने बताया कि वृक्षा आयुर्वेद पर भी काम शुरू किया गया है। जिसमें एक खेत की मिट्टी को वृक्षा आयुर्वेद के सिद्धांतों के अनुसार तैयार किया जा रहा है जिससे उसमें प्राकृतिक तरीके से खेती की जा सके। इस पर प्रमुख सचिव ने कहा कि यह सराहनीय पहल है इससे भारतीय संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा और यह लोग जानेंगे कि कृषि के क्षेत्र में भारत कितना अग्रणी था।

कृषि महाविद्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन

ग्वालियर। कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर में रेड रिबन क्लब के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं, राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक एवं महाविद्यालय के शिक्षकगणों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

रक्तदान जीवन दान है, इस विचार से प्रेरित होकर राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक एवं महाविद्यालय के छात्रों ने रक्तदान में सहयोग प्रदान किया। डॉ. शोभना गुप्ता विभाग प्रमुख ने बताया कि रक्तदान करने से किसी की जान बच सकती है, रक्त की हमेशा जरूरत होती है एवं स्वास्थ्य सेवा प्रदाता देश और दुनिया भर के अस्पतालों में हर दिन हर घंटे रक्त का उपयोग करते हैं। डॉ. अर्चना छारी ने बताया कि बार-बार रक्त दान करने वालों में लीवर, फेफड़े, पेट और गले के कैंसर का जोखिम कम होता है।

इस अवसर पर उद्यानिकी विभाग के प्राध्यापक डॉ. आर.के. जायसवाल, डॉ. सुधीर सिंह चौहान, डॉ. एस.जी. तेलंग, डॉ. अनुराधा गोयल, डॉ. प्रज्ञा सिंह, कृषि प्रसार शिक्षा विभाग सहयोगी सदस्य सपना उपाध्याय, वतन भटनागर, अंशुल गुप्ता, कृष्णा पाल एवं महाविद्यालय परिवार के अन्य सदस्य उपस्थित थे। इस अवसर पर रक्तदान करने वाले प्रत्येक दाता को प्रशस्ति पत्र एवं उपहार देकर सम्मानित किया गया। प्राध्यापक वर्ग में कृषि प्रसार शिक्षा की विभाग प्रमुख डॉ. शोभना गुप्ता एवं डॉ. दीपक कुमार वर्मा ने रक्त दान देकर कार्यक्रम की शुरुआत की।

अनमोल वचन

व्यक्तियों को सुधरने-समझने का अवसर एक सीमा तक ही दिया जाता है।
– श्रीमद् भावगत

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

फाल्गुन कृष्ण /शुक्ल पक्ष विक्रम संवत 2081 ईस्वी सन् 2024-25

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
18 फरवरी 25	मंगलवार	फाल्गुन कृष्ण-06	
19 फरवरी 25	बुधवार	फाल्गुन कृष्ण-07	
20 फरवरी 25	गुरुवार	फाल्गुन कृष्ण-07	
21 फरवरी 25	शुक्रवार	फाल्गुन कृष्ण-08	
22 फरवरी 25	शनिवार	फाल्गुन कृष्ण-09	
23 फरवरी 25	रविवार	फाल्गुन कृष्ण-10	
24 फरवरी 25	सोमवार	फाल्गुन कृष्ण-11	विजया एकादशी
25 फरवरी 25	मंगलवार	फाल्गुन कृष्ण-12	
26 फरवरी 25	बुधवार	फाल्गुन कृष्ण-13	पंचक 4.18 रात अंत से
27 फरवरी 25	गुरुवार	फाल्गुन कृष्ण-14	पंचक
28 फरवरी 25	शुक्रवार	फाल्गुन कृष्ण-30/1	पंचक
01 मार्च 25	शनिवार	फाल्गुन शुक्ल-02	पंचक
02 मार्च 25	रविवार	फाल्गुन शुक्ल-03	पंचक
03 मार्च 25	सोमवार	फाल्गुन शुक्ल-04	पंचक 10.34 दिन तक

- **शुभम मिश्रा**
(पीएचडी स्कालर) पादप रोग
जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि., जबलपुर
- **दिनेश पंचेश्वर,** वैज्ञानिक,
गन्ना अनुसंधान केन्द्र,
बोहानी (नरसिंहपुर)

गेहूँ के प्रमुख रोग व उनका प्रबंधन

गेहूं की भरपूर पैदावार के लिये उन्नत किस्म के बीज समुचित मात्रा में खाद और सिंचाई के साथ हानिकारक बीमारियों और कीटों का उचित समय में नियंत्रण भी अति आवश्यक है। अन्यथा फसलों की उत्पादन क्षमता काफी कम हो जाती है।

बीमारियों एवं कीट प्रकोप के कारण साधारणतया 10 प्रतिशत तक उत्पादन क्षमता कम हो जाती है और किसी वर्ष में अधिक अनुकूल वातावरण मिलने पर प्रकोप इतना अधिक हो जाता है कि पूरी फसल चौपट हो जाती है। इस लेख में गेहूँ में लगने वाली प्रमुख बीमारियों तथा उनके नियंत्रण के उपये सुझाये गये हैं। मप्र. में पाये जाने वाले गेहूँ के प्रमुख रोग निम्नानुसार हैं। जिनके कारण प्रतिवर्ष अन्नोत्पादन में अत्याधिक गिरावट आती है।

हैल्मिन्थोस्पोरियम पर्ण चित्ती रोग: इस रोग से पर्ण चित्ती अवस्था में पत्तियों एवं पर्णच्छदों पर पीले भूरे रंग के अनिश्चित आकार के चित्ते बनते हैं।

उपचार: स्वस्थ्य एवं प्रमाणित बीज बोयें एवं कटाई के बाद रोग ग्रस्त अवशेषों को खेत से एकत्र कर नस्ट कर देना चाहिये। फसल चक्र अपनायें।

जड़ एवं पाद सड़न : लक्षण जड़ों में हल्के भूरे रंग की सड़न या बिगलन होने लगती है और पौधा पीला पड़ने लगता है। जमीन की सतह पर पौधों के तना में भी सड़न पैदा होती है और छोटे-छोटे राई के दानों के समान स्केलेरोशिया सफेद कवक जाल के साथ प्रभावित तने पर लिपटे रहते हैं बाद में सक्रमित पौधे मर जाते हैं।

उपचार: गेहूँ की बोनी नवम्बर में करें। 2.5 ग्राम जिनेब प्रति कि.ग्रा. से बीज उपचारित कर बोयें। गर्मी में खेत की जुताई करें और फसल चक्र अपनायें बैविस्टीन+मैन्कोजेब (0.2%) का 15 दिन के अन्तराल पर दो स्प्रे करें।

पत्ती झुलसा रोग/पर्ण अंगमारी/अल्टरनेरिया ब्लाइट: इस रोग के प्रभाव से पत्तियों पर कुछ पीले व कुछ भूरापन लिये हुए अण्डाकार धब्बे निचली पत्तियों पर दिखाई देते हैं। ये धब्बे बाद में किनारों पर कत्थई भूरे रंग के तथा बीच में हल्के भूरे रंग के हो जाते हैं। रोग की अधिक तीव्रता में पत्तियाँ झुलस सी जाती है और पत्तियाँ जली सी लगने लगती है।

उपचार: पूर्ण रोग अवरोधी प्रजातियाँ उपलब्ध नहीं है परन्तु प्राय: नई प्रजातियाँ आंशिक रूप से अवरोधी हैं उन्हें ही लगाना चाहिए। वीटाबैक्स 200 का 02 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करने पर गेहूँ के जमाव और बढ़वार में वृद्धि होती है। रोग के फैलने पर मैकोजेव 2 मिलीग्राम/लीटर पानी अथवा जिनेव 75 प्रतिशत 2.5 मिलीग्राम/लीटर पानी, या (टेबुकोनाजोल (रॉकसिल) 1.5 मि.ग्रा. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल में दो बार छिड़काव करें।

गेरूई या रतुआ रोग/किट्ट रोग: गेहूँ की फसल में तीन प्रकार के पीला, भूरा एवं काला किटट अधिक हानि पहुचाते हैं। इस रोग के प्रभाव से पौधे के तने तथा पत्तियों पर गेरुई भूरे नारंगी रंग अथवा कोल रंग फूफूंदी के फफोले पत्तियों पर पड़ पाते है, जो बाद में बिखर कर अन्य पत्तियों को ग्रसित कर देते हैं। इस रोग का प्रकोप मैदानी भागों में फरवरी-मार्च के महिने में अधिक होता है।

उपचार: रोग प्रतिरोधी किस्में बोयें। काला भूरा के लिये निम्नलिखित प्रतिरोधी किस्में लगायें नर्मदा 14, नर्मदा 165, 112 शंकर, 65 एवं सुजाता (एचडी 1468) एन.पी. 404, सोनालिका (एस 308) डब्ल्यू एच डी. 2236, जयराज एच.डी. 45, 30 राज 1555 राज 911, पीले गेरूआ के लिये निम्नलिखित प्रतिरोधी किस्में लगायें एन.पी. 846 सोनालिका एस 331 यू.पी. 301, यू.पी. 215 एच.डी. 2135, 2204, 2009, डब्लू एल 811 मालवीय 12 एवं राज 911 गेहूँ की फसल में गेरू रोगों के नियंत्रण के लिए डाइथेन एम 45 या जिनेव या प्लांट वेक्स का 0.2 प्रतिशत का घोल बनाकर पहला छिड़काव रोग दिखाई देते ही दूसरा ड़िकाव 10 दिन व तीसरा छिड़काव 15 दिन के अंदर पर करना चाहिए।

गेहूँ में अनावृत कण्डुआ रोग: फफूंद जनित यह रोग अन्त: बीजीय है। इस रोग में बालियों के स्थान पर काला धूल भर जाता हैं

उपचार : रोग ग्रस्त बालियों को अलकाथिन के थैले में इक्टठा कर जला दें। रोग प्रतिरोधी जातियाँ बोयें जैसे एन.पी. 824, एन.पी.पी. 406, एच.डी. 1640, सोनालिका, कल्याण सोना इस रोग के बचाव के लिये बीज उपचार बीटावेक्स या वेविस्टीन 2 ग्राम प्रति किग्रा बीज से करें।

करनाल बंट रोग: यह रोग सर्वप्रथम करनाल में देखा गया। इस कारण इस रोग का नामांकरण करनाल बंट हो गया। इस रोग में गेहूँ के दाने की बाहरी खोल रह जाती है। दानों के अंदर काला चूर्ण भरा रहता है जो रोग के स्पोर होते है। बंट से प्रभावित बालियों में एक विशेष दुर्गंध (मछली की गंध की तरह) आती है। जो डाई मिथाइल एमीन की तरह होती है। इस कारण संक्रमित अनाज खाने के अयोग्य हो जाता है।

उपचार: रोग अवरोधी किस्मों जैसे एचडी. 29, पीबीडब्ल्यू. 502, को प्रयोग करना चाहिये जिस खेत में रोग लग गया हो तो उसमें कम से कम दो वर्ष तक गेहूँ नहीं उगाना चाहिए। पारायुक्त कवक नाशी 2.5 ग्राम प्रति किग्रा बीज से बीज उपचार करें।

गेहूँ का सेहूँ/अकड़ी रोग: रोग के आरम्भ में पत्तियाँ टेढ़ी-मेढ़ी होती है। बाली निकलने पर सूत्रकृमि पुष्प विभाग में प्रवेश कर दानों को अकड़ी के रूप में परिवर्तित करते हैं। यह रोग एक सूत्रकृमि (निमाटोड) द्वारा उत्पन्न होता है इस रोग से ग्रसित दाने गोल, कड़े भूरे रंग के हो जाते हैं। ये दाने भिगोने पर फूलकर मुलायम हो जाते है तथा दबाने पर पतले धागे के आकार में सैकड़ों की संख्या में सूत्रकृमि निकलते हैं। ये मिट्टी में गिरने अथवा गेहूँ के साथ मिल जाने पर 10 वर्ष से अधिक समय तक जीवित रहते हैं।

उपचार: रोगी दानों को बीज से अलग करने के लिए 10 प्रतिशत नमक के घोल में उपचार करना चाहिए। जिससे गेहूँ के स्वथ्य बीज नीचे तह में बैठ जाते हैं तथा सीडगॉल हल्का होने के कारण सतह पर तैरने लगता है। इनको निकाल कर अलग कर लें और नष्ट कर दें। स्वस्थ्य बीजों को दो या तीन बार साफ पानी से धोकर तेज धूप में सुखा लेना चाहिए। तत्पश्चात बीज उपचार कर बुवाई के लिये प्रयोग करना चाहिए।

दलहनी फसल अरहर में समन्वित कीट प्रबंधन

● डॉ. अखिलेश कुमार ● डॉ. स्मिता सिंह
● मंजू शुक्ला ● संदीप शर्मा
कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा (म.प्र.)

दलहनी फसलों में अरहर का विशेष स्थान है। अरहर की दाल में लगभग 20 से 21 प्रतिशत तक प्रोटीन पाया जाता है, साथ ही इस प्रोटीन का पाच्य मूल्य भी अन्य प्रोटीन से अच्छा होता है। शुष्क क्षेत्रों में अरहर किसानों द्वारा प्राथमिकता से बोई जाती है।

अरहर की दीर्घकालीन प्रजातियां मृदा में 200 किलोग्राम तक वायुमण्डीय नाइट्रोजन का स्थरीकरण कर मृदा उर्वरकता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। असिंचित क्षेत्रों में इसकी खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है, क्योंकि गहरी जड़ के एवं अधिक तापक्रम की स्थिति में पत्ती मुड़ने के गुण के कारण यह शुष्क क्षेत्रों में सर्वउपयुक्त फसल है। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक एवं आन्ध्र प्रदेश देश के प्रमुख अरहर उत्पादक राज्य हैं।

कीट

फली मक्खी: यह फली पर छोटा सा गोल छेद बनाती है। इल्ली (मैगट) अपना जीवनकाल फली के भीतर दानों को खाकर पूरा करती है एवं बाद में प्रौढ़ बनकर बाहर आती है। मादा प्रौढ़ वृद्धिरत फलियों में अंडे रोपण करती है। अंडों से मैगट बाहर आते हैं और दाने को खाने लगते हैं। फली के अंदर ही शंखी में बदल जाती है जिसके कारण दानों का सामान्य विकास रूक जाता है। दानों पर तिरछी सुरंग बन जाती है और दानों का आकार छोटा रह जाता है। शंखी में से प्रौढ़ बाहर आती है, जिसके कारण फली पर छोटा सा छेद दिखाई पड़ता है। फली मक्खी तीन सप्ताह में एक जीवन चक्र पूर्ण करती है।

फली छेदक इल्ली: छोटी इल्लियां फलियों के हरे ऊत्तकों को खाती हैं व बड़े होने पर कलियों, फूलों, फलियों व बीजों को नुकसान करती है। इल्लियां फलियों पर टेढ़े-मेढ़े आकार के बड़े छेद बनाती हैं। मादा प्रौढ़ छोटे सफेद रंग के अंडे देती है। इल्लियां पीली, हरी, काली रंग की होती हैं तथा इनके शरीर पर हल्की गहरी पट्टियां होती हैं। शंखी जमीन में रहती है। प्रौढ़ निशाचर होते हैं जो प्रकाश प्रपंच पर आकर्षित होते हैं। अनुकूल परिस्थितियों में चार सप्ताह में एक जीवन चक्र पूर्ण करती है।

फली का मत्कुण: मादा प्रायः फलियों पर गुच्छों में अंडे देती है। अंडे कत्थई रंग के होते हैं। इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही फली एवं दानों का रस चूसते हैं, जिससे फली आड़ी-तिरछी हो जाती है एवं दाने सिकुड़ जाते हैं। एक जीवन चक्र लगभग चार सप्ताह में पूरा करते हैं।

प्लूम माथ: इस कीट की इल्ली फली पर छोटा सा गोल छेद बनाती है। प्रकोपित दानों के पास ही इसकी विष्टा देखी जा सकती है। कुछ समय बाद प्रकोपित दाने के आसपास लाल रंग की फफूंद आ जाती है। मादा गहरे रंग के अंडे एक-एक करके कलियों व फली पर देती है। इसकी इल्लियां हरी तथा छोटे-छोटे काटों से आच्छादित रहती हैं। इल्लियां फलियों पर ही शंखी में परिवर्तित हो जाती है। एक जीवन चक्र लगभग चार सप्ताह में पूरा करती है।

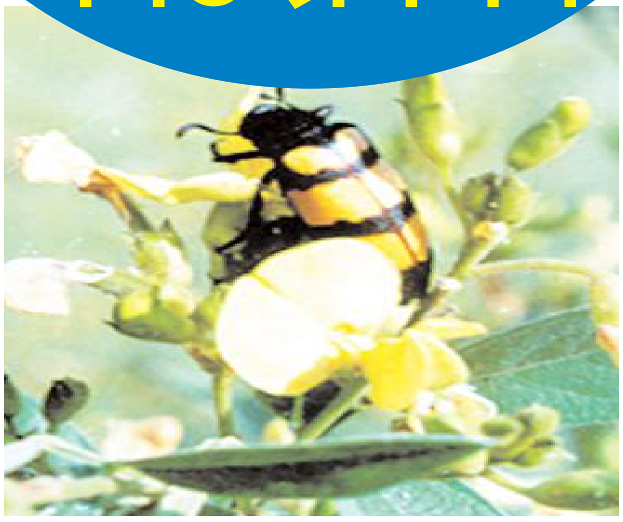

बिलिस्टर बिटल: ये भृंग कलियों, फूलों तथा कोमल फलियों को खाती है। जिससे उत्पादन में काफी कमी आती है। यह कीट अरहर, मूंग, उड़द तथा अन्य दलहनी फसलों को नुकसान पहुंचाता है। सुबह-शाम भृंग को पकड़कर नष्ट कर देने से प्रभावी नियंत्रण हो जाता है।

कीट प्रबंधन: कीटों के प्रभावी नियंत्रण हेतु समन्वित संरक्षण प्रणाली अपनाना आवश्यक है।

कृषि कार्य द्वारा

- गर्मी में गहरी जुताई करें।
- शुद्ध/सतत अरहर न बोयें।
- फसल चक्र अपनायें।
- अपने क्षेत्र में उचित प्रतिरोधी किस्मों को लगायें।
- क्षेत्र में एक समय पर बोनी करना चाहिए।
- रासायनिक खाद की अनुशंसित मात्रा ही डालें।
- अरहर में अन्तरवर्तीय फसलें जैसे ज्वार, मक्का, सोयाबीन या मूंगफली को लेना चाहिए।

यांत्रिकी विधि द्वारा

- प्रकाश प्रपंच लगायें।
- फली छेदक कीट की निगरानी के लिए 5 फीरोमोन ट्रेप प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करें।
- पौधों को हिलाकर इल्लियों को गिरायें एवं उनको इकट्ठा करके नष्ट करें।
- खेत में चिड़ियों के बैठने के लिए अंग्रेजी शब्द ''टी'' के आकार की खूटियां लगायें।

जैविक प्रबंधन

- एच.ए.एन.पी.वी. 500 एल.ई.प्रति हेक्टेयर+यू.वी. रिटारडेन्ट 0.1 प्रतिशत+गुड़ 0.5 प्रतिशत मिश्रण का शाम के समय छिड़काव करें।
- बेसिलस थूरेंजियन्सीस 1 किलोग्राम प्रति हेक्टर+टिनोपाल 0.1 प्रतिशत+गुड़ 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।

जैव-पौध पदार्थों के छिड़काव द्वारा

- निंबोली सत 5 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- नीम तेल या करंज तेल 10-15 मि.ली.1 मि.ली. चिपचिपा पदार्थ (जैसे सेन्डोविट, टिपाल) प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- निम्बेसिडिन 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।

रासायनिक प्रबंधन

- आवश्यकता पड़ने पर एवं अंतिम हथियार के रूप में ही कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करें।
- फली मक्खी एवं फली के मत्कुण के नियंत्रण हेतु सर्वांगीण कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करें जैसे- थायोमेथोक्ज़ाम 12.6, लैम्बडासायहलोथिन 9.5 की 250 मिली 500 मिली का 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।
- फली बेधक की संख्या आर्थिक क्षति स्तर पर या उससे ऊपर होने पर ही रासायनिक कीटनाशियों का प्रयोग करें। इण्डोक्साकार्ब 15.8 ई.सी. 500 मि.ली. मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 500 लीटर पानी में मिलाकर दो बार प्रथम छिड़काव 50 प्रतिशत फूल एवं फल की अवस्था एवं दूसरा छिड़काव प्रथम छिड़काव के 20 दिन बाद करना चाहिए। आवश्यकतानुसार छिड़काव 15 दिन बाद दोबारा करना चाहिएं।
- इस कीट के नियंत्रण हेतु क्लोरेंट्रानीलीप्रोल+ लैम्बडासाइहैलोथ्रिन 13.9 प्रतिशत 80 एम.एल. अथवा क्लोरेंट्रोनीलीप्रोल 18.5 प्रतिशत 50 एम.एल. अथवा इंडोक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत 150 एम. एल. प्रति एकड कि दर से 150 लीटर पानी के साथ प्रभावित फसल पर दोपहर बाद छिड़काव करे।

पत्ता और फूल गोभी के रोग एवं उनके रोकथाम के उपाय

- **अवि जैन,** पौध रोग विशेषज्ञ
- **शुभम मिश्रा**
  पी.एच.डी स्कालर (पौध रोग)
  जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र)

पत्ता गोभी का वैज्ञानिक नाम ब्रेसिका ओलेरेसिया वैरायटी केपिटाटा है। इसका आकार गोल और सतह चिकनी होती है। पत्तियाँ हरे, बैंगनी, या हल्के सफेद रंग की होती हैं, जो एक-दूसरे के ऊपर सख्ती से चिपकी रहती हैं। पत्ता गोभी का मूल स्थान भूमध्यसागरीय क्षेत्र माना जाता है। इसे यूरोप में प्राचीन काल से उगाया जा रहा है और बाद में यह पूरी दुनिया में फैल गया। भारत में यह मुख्य रूप से सर्दियों की फसल के रूप में उगाई जाती है।

पत्ता गोभी एक अत्यंत पौष्टिक सब्जी है। इसमें कई प्रमुख पोषक तत्व: है जैसे ,विटामिन सी जो की प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत बनाता है। फाइबर है जो पाचन तंत्र को सुचारू रखता है। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स कोशिकाओं को मुक्त कणों से होने वाले नुकसान से बचाते हैं। कम कैलोरी: वजन घटाने के लिए उपयुक्त है। पत्ता गोभी को सलाद, अचार, सब्जी, स्टर-फ्राई और सूप में इस्तेमाल किया जाता है। यह रक्तचाप को नियंत्रित करता है, त्वचा के लिए फायदेमंद है और हृदय रोगों का खतरा कम करता है। पत्ता गोभी ठंडी जलवायु में बेहतर उपज देती है। उपजाऊ, भुरभुरी और अच्छे जल निकास वाली मिट्टी पत्ता गोभी के लिए उपयुक्त होती है। 20 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद, 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 125 किलोग्राम फॉस्फोरस और 25 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर का उपयोग बुआई से पहले करें। इसके साथ 2 किलोग्राम एजोस्पिरिलम को बेसल खुराक के रूप में दें। इसके अलावा, रोपाई के एक महीने बाद 50 किलोग्राम नाइट्रोजन डाल कर मिट्टी को चढ़ा दे। सितंबर से नवंबर माह के बीच में इस की बुआई हो जानी चाहिए। पत्ता गोभी में बुवाई के 90-100 दिनों बाद सब्जी का उत्पादन मिलने लग जाता है।

फूलगोभी का वैज्ञानिक नाम ब्रेसिका ओलेरासिया वैरायटी बॉट्राइटिस है। इसका मुख्य भाग सफेद और मांसल होता है, जिसे ''फूल'' कहा जाता है, जबकि इसका बाहरी हिस्सा हरी पत्तियों से ढका रहता है। फूलगोभी की उत्पत्ति भूमध्यसागरीय क्षेत्र में हुई और इसे 16वीं शताब्दी में यूरोप से भारत लाया गया। वर्तमान में, यह भारत के हर राज्य में उगाई जाती है। फूलगोभी में भरपूर पोषण होता है। इसमें अनेको पोषक तत्व है जैसे विटामिन सी जो प्रतिरक्षा को बढ़ावा देता है। फोलेट है जो कोशिका निर्माण और विकास के लिए आवश्यक है । पोटेशियम रक्तचाप को नियंत्रित करता है। फाइटोन्यूट्रिएंट्स कैंसर रोधी गुणों के लिए फायदेमंद है। फूलगोभी का उपयोग भारतीय व्यंजनों में सब्जी, आचार, सूप इत्यादि रूपों में किया जाता है। फूलगोभी के कई औषधीय गुण भी है जैसे यह पाचन में मदद करती है, सूजन कम करती है और कैंसर से बचाव में सहायक है। यह भी ठंडे मौसम की फसल है। दोमट मिट्टी, जिसमें कार्बनिक पदार्थ अधिक हों, इसके लिए सब से अच्छी होती है। एफ.वाई.एम. 250-300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर, नाइट्रोजन 100-150 किग्रा प्रति हेक्टेयर, फास्फोरस 60-80 किग्रा प्रति हेक्टेयर तथा पोटेशियम 80 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से डालें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस और पोटेशियम की पूरी मात्रा खेत की तैयारी के समय मिट्टी में डालें। नाइट्रोजन की बची हुई आधी मात्रा को रोपाई के चार सप्ताह बाद मिट्टी में मिला दें। फूलगोभी की रोपाई करने का समय अगस्त से अक्टूबर के बीच सब से अच्छा होता है। युवा पौधों की वृद्धि के लिए इष्टतम तापमान लगभग 23 डिग्री सेल्सियस है, लेकिन बाद के चरणों में 17-20 डिग्री सेल्सियस सबसे अनुकूल है। उष्णकटिबंधीय किस्में 35 डिग्री सेल्सियस पर भी वृद्धि दिखाती हैं। जैसे ही फूलगोभी सही परिपक्वता प्राप्त कर लेती है और वे सघन होती हैं, और फूलगोभी का रंग सफेद बना रहता है, तुरन्त कटाई कर लेनी चाहिए। यदि कटाई में देरी होती है तो फूलगोभी जरूरत से ज्यादा पक जाती है और उसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है। ऐसी फूलगोभी ढीली, पत्तीदार, चावल जैसी या रोयेंदार हो सकती है। 60-90 दिनों में फूलगोभी का उत्पादन मिलने लगता है।

प्रमुख रोग एवं उन के प्रबंधन

डम्पिंग ऑफ

लक्षण

- गोभी में डम्पिंग ऑफ दो चरणों में होता है, उद्भव-पूर्व चरण और उद्भव-पश्चात चरण।
- पूर्व-उद्भव चरण में पौधे मिट्टी की सतह पर पहुंचने से ठीक पहले ही नष्ट हो जाते हैं। युवा मूलक और प्लम्यूल मर जाते हैं और पौधे पूरी तरह सड़ जाते हैं।
- उद्भव के बाद के चरण में पौधा जमीनी स्तर से कालर के पास से संक्रमित हो जाता है। संक्रमित ऊतक नरम हो जाते हैं और पानी से भीग जाते हैं। पौधे गिर जाते हैं और मर जाते हैं।

अनुकूल परिस्थितियां

उच्च आर्द्रता, उच्च मृदा नमी, बादल छाए रहना तथा कुछ दिनों के लिए 24 डिग्री सेल्सियस से कम तापमान, संक्रमण तथा रोग के विकास के लिए आदर्श होते हैं। पौधों की अधिक संख्या, अधिक वर्षा के कारण नमी, खराब जल निकासी और मिट्टी में घुलनशील पदार्थों की अधिकता के कारण पौधों की वृद्धि में बाधा उत्पन्न होती है तथा उस कारणवश डैम्पिंग-ऑफमें वृद्धि होती है।

नियंत्रण

- यदि डैम्पिंग-ऑफ रोग दिखाई दे, तो कुछ समय के लिए पानी देना बंद कर दें। पौधों के चारों ओर की मिट्टी को थोड़ी सूखने दें। यदि पौधे फ्लैट्स या कोल्ड फ्रेम्स में उगाए जा रहे हैं, तो उन्हें अधिक से अधिक हवा और प्रकाश प्रदान करें।
- फसल चक्र में अनाज की फसलों को शामिल करने से मिट्टी में रोगजनकों की संख्या को कम किया जा सकता है।
- बीजों को ट्राइकोडर्मा विरीडी या पीसुडोमोनास फ्लोरोसेंस से 4-5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।
- फफूंदी रोधी रसायन जैसे कैपटन या थिरम 2-3 ग्राम प्रति किलोग्राम मात्रा से बीज उपचारित करें।
- मेटालैक्सिल या मनकोजेब भी फंगल रोगजनकों के खिलाफ प्रभावी हो सकते हैं।
- मिट्टी में फफूंदनाशी जैसे कॉपर ऑक्सीक्लोराइड, कार्बेन्डाजिम या रिडोमिल गोल्ड को 2 ग्राम प्रति लीटर पानी से ड्रेंचिंग करें।

क्रुसिफर्स का क्लब रूट

लक्षण

- पौधों में बौनापन और पीलापन होना ।
- गर्मी के दिनों में पत्तियां पीली होकर मुरझा जाती हैं।
- जड़ों में क्लब जैसी सूजन।
- क्लब रूट रोग विशेष रूप से 7 से कम पीएच वाली मिट्टी पर प्रचलित होता है, जबकि यह देखा गया है कि यह रोग अक्सर भारी मिट्टी और कम कार्बनिक पदार्थ वाली मिट्टी में कम गंभीर होता है।

अनुकूल परिस्थितियां

- यह 12-27 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर होता है।
- उच्च मृदा नमी भी एक कारण है।
- तटस्थ से अम्लीय मिट्टी जिसका 5-7.0 पीएच है वह इस रोग के आने के लिए सहायक है।

नियंत्रण

- मिथाइल ब्रोमाइड का 1 किलोग्राम प्रति 10 वर्ग मीटर की दर से मिट्टी में फ्यूमिगेशन करें, उसके बाद प्लास्टिक फिल्म से ढक दें।
- 4 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से कैपटन/थिरम के साथ बीज उपचार करें उसके बाद ट्राइकोडर्मा विरीडी से उपचारित करें।
- लाइम का उपयोग 2.5 टन प्रति हेक्टेयर से करें।
- मिट्टी में कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 0.25 प्रतिशत से ड्रेंचिंग करें।
- पौधों को 2 ग्राम प्रति लीटर कार्बेन्डाजिम घोल में 20 मिनट तक डुबोएं। मुख्य खेत में पौधों के आसपास की मिट्टी को कार्बेन्डाजिम/1 ग्राम प्रति लीटर पानी से ड्रेंच करें।

ब्लैक रोट (काला सड़ांध)

लक्षण

- पौधों में लक्षण सबसे पहले पत्ती के किनारों के पास क्लोरोटिक या पीले (कोणीय) क्षेत्रों के रूप में दिखाई देते हैं।
- पीला क्षेत्र शिराओं और मध्य शिरा तक फैल जाता है, जिससे विशिष्ट 'अ' आकार के क्लोरोटिक धब्बे बनते हैं, जो बाद में काले हो जाते हैं।
- शिराएं भूरे रंग की हो जाती हैं और अंतत: काली हो जाती हैं।
- संवहनी (वैस्कुलर ब्लैकनिंग) कालापन प्रभावित शिराओं से आगे मध्य शिरा, डंठल और तने तक फैल जाता है।
- उन्नत अवस्था में, संक्रमण जड़ प्रणाली तक पहुँच सकता है और संवहनी बंडलों का काला पड़ना शुरू हो जाता है। प्रभावित भागों पर जीवाणु रिसाव भी देखा जा सकता है।
- यदि संक्रमण प्रारंभिक अवस्था में हो तो पौधे मुरझाकर मर जाते हैं।
- यदि संक्रमण देर से होता है तो पौधे मृदु गलन रोग से ग्रस्त होकर मर जाते हैं।

अनुकूल परिस्थितियां

- सापेक्ष आर्द्रता 90 प्रतिशत से अगर ज्यादा हो तब यह रोग आने के आसार बढ़ जाते है।
- अधिक नमी होना भी इस रोग के आने का एक कारण है।
- ज्यादा बारिश के कारण यह रोग आता है।

नियंत्रण

- बीजों को थर्मल उपचार करने के लिए पानी का तापमान 70-80 डिग्री सेल्सियस होना चाहिए और उस से 15-20 मिनट तक ट्रीट करे या बायोफ्यूल जैसे ट्राइकोडर्मा या पीसुडोमोनास फ्लोरोसेंस से उपचारित करें।
- अच्छे जल निकासी वाले स्थान पर खेती करें और भारी मिट्टी से बचें।
- कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम प्रति लीटर के हिसाब से ड्रेंचिंग करें।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

सस्टेनेबल फार्मिंग टेक्नोलॉजी अवार्ड से नवाजे जाएंगे डॉ. राजाराम

जैविक खेती, प्राकृतिक ग्रीनहाउस के लिए मिलेगा राष्ट्रीय सम्मान

भोपाल। देश के ख्याति प्राप्त जैविक कृषि वैज्ञानिक और पर्यावरणविद् डा. राजाराम त्रिपाठी को सस्टेनेबल फार्मिंग टेक्नोलॉजी अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान उन्हें कृषि विज्ञान केंद्र आईसीएआर, कृषि विभाग छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश शासन के मार्गदर्शन तथा फार्म एंड फूड के संयुक्त तत्वावधान में 28 फरवरी को भोपाल में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया जाएगा।

इस प्रतिष्ठित अवार्ड के लिए चुने गए डा. त्रिपाठी देश के सबसे शिक्षित किसानों में गिने जाते हैं। वे अलग-अलग पांच विषयों में एमए, बीएससी(गणित), एलएलबी, डॉक्टरेट और पीएचडी की कई उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने माँ दंतेश्वरी हर्बल समूह की स्थापना की, जिससे आज लाखों जैविक किसान जुड़े हुए हैं। पर्यावरण संरक्षण के प्रति समर्पित डा. त्रिपाठी इस वर्ष के अंत तक 51 लाख वृक्षारोपण का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं और अब तक 21 लाख से अधिक पेड़ रोप चुके हैं। वे 40 से अधिक देशों की कृषि अध्ययन यात्राएँ कर चुके हैं और हाल ही में ब्राजील सरकार के विशेष आमंत्रण पर वहाँ की कृषि व्यवस्था का गहन अध्ययन कर लौटे हैं।

इन्होंने 40 लाख रूपए के एक एकड़ के पॉलीहाउस के सस्ते और टिकाऊ विकल्प नेचुरल ग्रीनहाउस का सफल नवाचार किया जिसकी लागत मात्र 2 दो लाख रुपए प्रति एकड़ आती है, जो देश भर के किसानों के लिए क्रांतिकारी साबित हो रहा है। इसके अलावा, चार गुना अधिक उत्पादकता देने वाली काली मिर्च की नई किस्म मां दंतेश्वरी काली मिर्च -16 विकसित की है। डा. त्रिपाठी को इससे पहले भी ग्लोबल ग्रीन वॉरियर अवार्ड, राष्ट्रीय कृषि नवाचार पुरस्कार और इंडियन ऑर्गेनिक फार्मिंग एक्सीलेंस अवार्ड जैसे कई प्रतिष्ठित सम्मान मिल चुके हैं।

विटामिन ए से भरपूर नई किस्मों की रंगीन गोभी उगाई

पन्ना। जिले के अमानगंज क्षेत्र में लोक कल्याण भूमिका समिति के माध्यम से फूल गोभी एवं बंद गोभी, जो विटामिन और आयरन का स्त्रोत है, यह रिलाइन्स फाउंडेसन के वित्तीय सहयोग से करवाया लगवाया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य पोषण को बढ़ावा देना है, साथ ही कृषि की नई तकनीकी के माध्यम से किसान की आजीविका को बढ़ाना है। संस्था के माध्यम से ग्राम सिरी में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं से सभी विटामिन से युक्त सब्जियों के बीज लाकर नर्सरी तैयार की गई। जिसमें पिंक, यलो गोभी ब्रोकली, चुकंदर, शलजम, गाजर, पालक जैसे 11 प्रकार के बीज दिए गए। यह पोषण वाटिका विटामिन से भरपूर है। यह मुख्यत: महिलाओं के लिए हितकर है, जो घर में छूटी पड़ी जमीन पर आसानी से उगा सकती है।

कृषि विज्ञान केंद पन्ना के कृषि वैज्ञानिक **डॉ. पी.एन. त्रिपाठी** द्वारा किसानों से मिलकर नई वेराइटी के बीजों की जानकारी दी गई एवं इन सब्जियों के गुणों के बारे में बताया। साथ ही अन्य फसलों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की।

संस्था लोक कल्याण भूमिका समिति के परियोजना अधिकारी **प्रवीण भारद्वाज** द्वारा किसानों के लिए किए जा रहे कार्यों के बारे में चर्चा की। संस्था पन्ना जिले में 870 सब्जी वाले किसानों के साथ कार्य कर रही है, जिसका मुख्य उद्देश्य कृषि के क्षेत्र मे नई तकनीकी, पोषण और आजीविका संवर्धन है।

डॉ. त्रिपाठी को मिला महिंद्रा थार रॉक्स का सुपर टाप माडल

संयुक्त परिवार और कृषि जरूरतों के अनुरूप डॉ. त्रिपाठी ने चुनी अत्याधुनिक भारतीय एसयूवी

रायपुर। भिलाई के शिवनाथ ऑटोमोबाइल्स के प्रमोटर्स श्याम गुप्ता, नंदकिशोर गुप्ता और मनीष गुप्ता ने रायपुर में आयोजित ऑटो एक्सपो के दौरान महिंद्रा के सुपर टॉप मॉडल 4×4 ऑटोमेटिक डीजल एसयूवी की चाबी छत्तीसगढ़ के प्रख्यात जैविक किसान डॉ. राजाराम त्रिपाठी को सौंपते हुये इसकी विशिष्ट खूबियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह पहली गाड़ी प्रदेश का नाम रोशन करने वाले डॉ. त्रिपाठी को सौंपते हुए गर्व की अनुभूति हो रही है। इस मौके पर प्रसिद्ध आरजे अविनेश ने डॉ. त्रिपाठी का संक्षिप्त साक्षात्कार लिया और उनकी इस गाड़ी के चुनाव के पीछे की वजह जानी।

संयुक्त परिवार और कृषि कार्यों को ध्यान में रखते हुए लिया फैसला : डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि उनका संयुक्त परिवार काफी बड़ा है, जिसमें उनके सात भाई और उनकी बहुएं-बेटे-बेटियां मिलाकर 45 से अधिक सदस्य हैं। ऐसे में बेहतर और सुविधाजनक परिवहन के लिए उनके पास कई भारतीय और विदेशी कारों का बेड़ा पहले से मौजूद है। उनके कारवां में लैंड रोवर, बीएमडब्ल्यू, मर्सिडीज, पजेरो, फॉर्च्यूनर, एक्सयूवी 500, टीयूवी, इलांट्रा, वैगनआर, ब्रीजा, स्कॉर्पियो, आल्टो सहित कई महिन्द्रा जीप 1984 का माडल भी शामिल हैं। आपकी सबसे पहली फोर व्हीलर कौन सी थी पूछने पर उन्होंने कहा सबसे पहले फोर व्हीलर नहीं बल्कि सीधे 8 व्हीलर यानी ट्रैक्टर ट्राली से शुरुआत की थी। अगर पहले कार की बात करें तो मैंने सबसे पहले महिंद्रा की जीप मॉडल 1984 खरीदी थी, जिससे साथ ट्राली थी जो हमारे बहुत काम आती थी। तो यूं कह सकते हैं कि हमारी पहली कार 6

पहिए वाली थी, जो आज भी हमने ठीक-ठाक हालत में करके रखी है और अभी इसका रिनोवेशन जारी है। फिर इंडिका, फिर टाटा सफारी, टाटा इंडिगो, माटिज, होंडा सिटी आदि कई गाड़ियां उन्होंने चलाई हैं। लेकिन बस्तर के पहाड़ी और ग्रामीण इलाकों के खेत-खलिहानों की सुगम यात्रा के लिए उन्होंने इस खास एसयूवी को चुना है।

भारत की तकनीकी प्रगति पर गर्व, इलेक्ट्रिक वाहनों के भविष्य पर भरोसा : डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि जब विदेशी मेहमान उनके खेतों में आते हैं तो वे उन्हें भारतीय निर्मित गाड़ियों में घुमाना पसंद करते हैं, जिससे देश की तकनीकी ताकत का प्रदर्शन होता है। इसके अलावा उन्होंने इलेक्ट्रिक वाहनों को भविष्य की जरूरत बताते हुए कहा कि महिंद्रा सहित कई कंपनियां पर्यावरण अनुकूल तकनीकों को बढ़ावा दे रही हैं।

मां दंतेश्वरी समूह अब केवल भारत निर्मित गाड़ियों का ही करेगा उपयोग: उन्होंने देसी और विदेशी लगभग सभी गाड़ियां चलाई है और आज हम गर्व से कह सकते हैं कि भारतीय गाड़ियां भी अब किसी भी विदेशी गाड़ी से किसी भी मायने में कमतर नहीं है। उन्होंने तथा उनके समूह ने निर्णय लिया है कि आगे भविष्य में वह केवल भारत निर्मित भारतीय गाड़ियों का ही उपयोग करेंगे। उन्होंने नए वाहन खरीदने वालों को सुझाव दिया कि वे अपनी जरूरत और बजट के अनुसार वाहन का चयन करें, न कि केवल विज्ञापन से प्रभावित होकर फैसला लें।

कृभको और नीदरलैंड के फार्म फ्राइट्स ने संयुक्त उद्यम समझौते पर हस्ताक्षर किए

शाहजहांपुर में होगी आलू प्रसंस्करण इकाई स्थापित

नई दिल्ली। कृषक भारती कोऑपरेटिव लिमिटेड (कृभको) और नीदरलैंड के फार्म फ्राइट्स ने शाहजहांपुर (उप्र) में अत्याधुनिक, हाई-टेक आलू प्रसंस्करण इकाई स्थापित करने के लिए एक संयुक्त उद्यम समझौते पर हस्ताक्षर किए। कृभको की ओर से प्रबंध निदेशक एम.आर. शर्मा ने और फार्म फ्राइट्स की ओर से अध्यक्ष पीटर डी. ब्रुइजन ने समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर कृभको के अध्यक्ष डॉ. चंद्रपाल सिंह सहित अन्य निदेशक भी उपस्थित रहे।

नीदरलैंड के आलू की विशेष किस्में जैसे सैंटाना और क्विंटेरा शाहजहांपुर क्षेत्र में किसानों के खेत पर बड़े पैमाने पर खेती की जाएगी। कृभको और फार्म फ्राइट्स की एक समर्पित टीम विशेष किस्मों के बीज उपलब्ध कराएगी और किसानों को इसकी खेती में मार्गदर्शन देगी। यह परियोजना शाहजहांपुर और आसपास के किसानों की आय बढ़ाने में सहायक होगी। इस संयंत्र से सैकड़ों रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे। उत्तर प्रदेश की औद्योगिक नीति के तहत यह परियोजना सुपर मेगा प्रोजेक्ट के रूप में विकसित की जा रही है।

फार्म फ्राइट्स के चेयरमैन पीटर डी. ब्रुइजन के नेतृत्व में कृभको और फार्म फ्राइट्स की एक उच्च स्तरीय टीम ने परियोजना स्थल को अंतिम रूप देने के लिए शाहजहांपुर का दौरा किया। कृभको भारत की अग्रणी उर्वरक संस्थाओं में से एक है। कृभको के पास हजीरा में एक मेगा गैस आधारित यूरिया संयंत्र है, जो सालाना 23 लाख मीट्रिक टन यूरिया का उत्पादन करने में सक्षम है। अपनी 100 प्रतिशत स्वामित्व वाली सहायक कंपनी कृभको फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के माध्यम से उत्तर प्रदेश में एक और उर्वरक संयंत्र संचालित किया जाता है, जो 11 लाख मीट्रिक टन यूरिया का उत्पादन करने में सक्षम है। कृभको ओमान इंडिया फर्टिलाइजर कंपनी के प्रमुख प्रमोटरों में से एक है। यूरिया के अलावा कृभको किसानों को डीएपी, एनपीके, जैव उर्वरक, सिटी कम्पोस्ट, प्रमाणित बीज, जैव उत्तेजक और अन्य संबद्ध कृषि इनपुट भी प्रदान करता है।

कृभको का स्वामित्व प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहकारी समितियों के माध्यम से भारत के किसानों के पास है। अपनी स्थापना के बाद से कृभको ने किसानों की बेहतरी और उत्थान के लिए काम किया है। इस संबंध में कृभको नीदरलैंड के फार्म फ्राइट्स के साथ संयुक्त उद्यम में शाहजहांपुर में आलू प्रसंस्करण इकाई स्थापित करने जा रहा है। फार्म फ्राइट्स का विभिन्न प्रकार के आलू फ्राई और आलू स्पेशलिटी के उत्पादन के व्यवसाय में 50 वर्षों से अधिक समय का अनुभव है। फार्म फ्राइट्स 100 से अधिक देशों में खाद्य सेवा प्रदाताओं को अपने उत्पाद वितरित करता है। फार्म फ्राइट्स मैकडॉनल्ड्स, केएफसी, डोमिनोज आदि जैसी वैश्विक खाद्य श्रृंखलाओं का प्रमुख आपूर्तिकर्ता है। फार्म फ्राइट्स विश्वभर में हर साल 15 लाख मीट्रिक टन आलू का उत्पादन करता है और 80 से अधिक प्रकार के फ्राई, स्पेशलिटी और ऐपेटाइजर की आपूर्ति करता है। कृभको एवं फार्म फ्राइट्स के इस संयुक्त उद्यम समझौते से जहां एक ओर किसानों की आय में वृद्धि होगी, वहीं दूसरी ओर उत्तर प्रदेश राज्य में नौकरी सृजन में वृद्धि होगी तथा सहकारिता के माध्यम से समृद्धि के नए द्वार खुलेंगे।

महेन्द्र गुप्ता खाद बीज कीटनाशक संघ के अध्यक्ष नियुक्त

(तारेश लोधी)

नरसिंहपुर। जिले के खाद बीज कीटनाशक व्यापारियों की विगत दिवस संपन्न बैठक में संगठन संबंधी अनेक विषयों के साथ व्यापारिक कारोबार में आने वाली परेशानियों के संबंध में चर्चा की गई। बैठक के दौरान आम सहमति से महेन्द्र गुप्ता को जिला खाद बीज कीटनाशक संघ नरसिंहपुर का जिला अध्यक्ष नियुक्त किया गया। श्री गुप्ता ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुये कहा कि सभी को लेकर संगठन चलायेंगे।

मोक्षा की कहानी-किसान की जुबानी

शन्मुखा उत्पादों से किसानों को राहत

भोपाल। जिले के ग्राम एटखेड़ी के किसान प्रदीप दुबे ने अपने खेत में लहसुन की फसल लगाई है। श्री दुबे ने लहसुन की फसल में आने वाली एंटीफंगल एवं एंटीबैक्टीरियल फंगस को किस प्रकार नियंत्रित करने के लिये शनमुखा एग्रीटेक लिमिटेड के उत्पाद मोक्षा फंगीसाइड कारगर साबित हुआ है। मोक्षा के उपयोग करने से लहसुन की फसल में पीलेपन की समस्या, झुलसा रोग एवं पाउडर मिलडियू पर पूरी तरह से नियंत्रण कर सकते हैं एवं कम लागत में अधिकतम उत्पादन ले सकते हैं।

सहकारिता से बेहतर कृषि विकास संभव : डॉ. सोलंकी

सतना। इफको सतना और जिला सहकारी बैंक, सहकारिता विभाग की ओर से एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इफको राज्य विपणन प्रबंधक डॉ. डी.के. सोलंकी थे। कार्यक्रम में उप महाप्रबंधक डॉ. देवेंद्र सिंह, उपायुक्त सतना के प्रभाकरण प्रकाश, जिला सहकारी बैंक के सीईओ एस.सी. गुप्ता, जिला सहकारी बैंक के विपणन अधिकारी आशीष मिश्रा, कृषि विभाग से एडीए राम सिंह बागड़ी, जिला विपणन अधिकारी मार्कफेड सतना नेहा प्रकाश तिवारी,जिला बैंक के सभी शाखा प्रबंधक, मार्कफेड के गोदाम प्रभारी, सहकारी निरीक्षक समेत 60 से अधिक प्रतिभागी की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में डॉ. डी.के. सोलंकी ने सहकारिता के विकास में इफको के योगदान को साझा करते हुए कहा कि कृषक के विकास के बिना सहकार से समृद्धि अधूरी है। कृषक कम खर्चा कर, संतुलित उर्वरक का उपयोग में जैव उर्वरक, जल विलेय उर्वरक, सागरिका और इफको नैनो उर्वरक के उपयोग के बारे में विस्तार से बताया। डॉ.देवेंद्र सिंह ने सभी सहकारी बंधुओं का मिलकर प्रयास किया गया जिससे जनपद में नैनो उर्वरक कृषकों के बीच प्रदर्शन, कृषक गोष्ठी के माध्यम से जागरूक करने की सलाह दी।

कृषि विभाग के राम सिंह बागड़ी ने संतुलित उर्वरक प्रयोग, हरी खाद ढैचा और दलहनी फसलों के उपयोग कर, प्रदर्शन, नवीन तकनीक का उपयोग से कृषकों को अधिक उत्पादन और कम खर्च के तरीके के बारे में बताया। जिला सहकारी बैंक के सीईओ एस.सी. गुप्ता ने भारत सरकार के सहकार से समृद्धि के तहत बहुउद्देशीय कार्यों तथा सहकारी के व्यवसाय के विविधीकरण सीएससी, जन औषधियां, पेट्रोल डीजल कार्य ,को सहकारी समिति करने से समिति आर्थिक रूप से समृद्ध होगी।

उपायुक्त प्रभाकर प्रकाश ने सभी समितियों को कृषि निवेश, उर्वरक व्यवसाय और समिति के कार्यों को कृषक हित में किए जाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में इफको सतना के क्षेत्र अधिकारी राजेश कुमार मौर्य द्वारा कृषि, किसान और सहकारिता विकास में इफको द्वारा किए जा रहे कार्यों, भारत सरकार के उर्वरक में नैनो उर्वरकों के प्रयोग और उपयोगिता बारे में बताया, जिससे कृषक कम खर्च में अधिक फसल उत्पादन के उपाय के बारे में चर्चा की। जिला सतना में उर्वरक की उपलब्धता, वितरण व्यवस्था, अग्रिम भंडारण योजना के बारे में अवगत कराया तथा राज्य विपणन प्रबंधक से पर्याप्त उर्वरक की उपलब्धता को बनाए रखने के लिए इफको राज्य विपणन प्रबंधक से आग्रह किया।

कार्यक्रम में वर्ष 2024 में अधिक नैनो उर्वरक वितरण करने वाले केंद्र मार्क गोदाम सिविल लाइन के वीरेंद अहिरवार और सहकारी समिति भूमकहर बी पैक्स के प्रबंधक संपत कुमार शुक्ला को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन इफको क्षेत्रीय प्रबंधक सतना राजेश कुमार मौर्य ने किया तथा सभी अतिथियों को प्रतिभाग करने के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया।

● डॉ. पल्लवी भदौरिया ● डॉ. निधि सिंह चौधरी ● डॉ. एच.के. मेहता ● डॉ. अरुण मौर्य ● डॉ. पवन माहेश्वरी ● डॉ. ममता सिंह ● डॉ. विवेक अग्रवाल ● मधु शिवहरे ● डॉ. प्रतिभा कनेश (पशु औषधि विभाग)
पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, महू (म.प्र.)
नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

बकरी प्लेग बकरियों में एक घातक संक्रमण

बकरी पालन ग्रामीण परिवारों के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है और इसलिए मांस, ऊन, फाइबर और दुधारू पशु के रूप में इसके बहुउद्देशीय उपयोग हैं।

पेस्टे डेस पेटिट्स रयूमीनेंट्स छोटे जुगाली करने वाले जानवरों की एक अत्यधिक संक्रामक, तीव्र, वायरल बीमारी है। इस बीमारी को बकरी प्लेग के नाम से भी जाना जाता है। यह बीमारी भेड़ और बकरियों को प्रभावित करती है। यह जुगाली करने वाले छोटे पशुओं की एक व्यापक और विनाशकारी बीमारी है एवं देश की अर्थव्यवस्था और सुरक्षा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। यह एक घातक बीमारी है जिसमें बुखार, भूख न लगना, मुंह के चारों ओर दर्द सूजन, मुंह के चारों ओर घाव, नाक से आने वाले पानी आदि देखा जा सकता था है। प्रभावित जानवर बीमार, बेचैन दिखाई देगा और थूथन सूखा होगा।

इस बीमारी के लिए शीघ्र जांच और उपचार की आवश्यकता होती है क्योंकि उपचार में देरी से पशु की मृत्यु हो सकती है। जैसे ही बकरियों में ये निम्नलिखित लक्षण देखे जाएं, उन्हें तुरंत पशु चिकित्सक के पास ले जाना चाहिए।

महत्वपूर्ण लक्षण

- भूख न लगना
- मुंह के चारों ओर दर्दनाक सूजन
- मुंह के आसपास के घाव
- बुखार (104 से 106 डिग्री)
- नाक से पानी
- गाढ़ा बलगम
- चारा न खाना

- आंखों और नाक के आसपास पपड़ी पड़ना
- अतिसार रोग
- निर्जलीकरण
- कमजोरी
- निमोनिया
- आंखों से डिस्चार्ज होना
- खांसना

यह रोग मॉर्बिलिवायरस नामक जीवाणु के कारण होता है और अत्यधिक संक्रामक है, एवं प्रभावित जानवरों और गैर-संक्रमित जानवरों के बीच आसानी से संचारित हो सकता है। यह रोग रोगग्रस्त जानवरों एव स्वस्थ जानवरों के बीच निकट संपर्क के कारण संचारित होता है। संक्रमित जानवरों के अन्य स्राव और उत्सर्जन, अन्य जानवरों के संक्रमण के स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।

रोग से जुड़े जोखिम कारक

- रोग मुख्य रूप से युवा जानवरों को प्रभावित करता है।
- परिवहन तनाव और मौसम में परिवर्तन जानवरों की प्रतिरक्षा को कम करता है और उन्हें बीमारी के लिए अधिक संवेदनशील बनाता है।
- कृमि संक्रमण से पीड़ित जानवरों को जोखिम अधिक होता है।

पीपीआर का उपचार

- बकरियों में द्रव चिकित्सा, एंटीबायोटिक्स और एंटीहिस्टामिनिक का उपयोग करके पीपीआर का सफल उपचार प्राप्त किया जा सकता है।
- रोग का सफल नियंत्रण चिकित्सा के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, जिसमें, द्रव एंटीबायोटिक चिकित्सा और एंटीहिस्टामाइन के संयोजन के माध्यम से पुनर्जलीकरण शामिल है।
- सेफ्लोस्पोरिन जैसे एंटीबायोटिक्स बकरियों को दिए जा सकते हैं। इसके अलावा जानवरों की प्रतिरक्षा में सुधार के लिए लेवमिसोल सब्क्यूटेनीअस को बकरियों में उपयोग किया जा सकता है।

रोकथाम

- रोग आसानी से झुंडों के बीच संचारित हो सकता है। यही कारण है कि संक्रमित जानवरों को गैर-संक्रमित बकरियों से अलग करें। ▸ बीमारी वायरल है और इसका कोई इलाज नहीं है, केवल टीकाकरण ही जानवरों को संक्रमण से बचा सकता है। ▸ पीपीआर टीकाकरण पशुओं लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पीपीआर का टीकाकरण तीन महीने की उम्र में किया जाना चाहिए और फिर तीन साल बाद पुन: टीकाकरण किया जाना चाहिए।

मत्स्य पालक किसान प्रधानमंत्री मत्स्य किसान समृद्धि सह योजना का लाभ उठाएं

नर्मदापुरम। मत्स्य किसान, मछुआरे, मत्स्य पालक श्रमिक, मत्स्य विक्रेता अथवा ऐसे अन्य लोग जो सीधे मत्स्य पालन व्यवसाय कर रहे हैं एवं मत्स्य के क्षेत्र में सक्रिय हैं, ऐसे लाभार्थियों को, हितग्राहियों को लाभ पहुंचाने के लिए भारत सरकार ने 8 फरवरी 2024 को प्रधानमंत्री मत्स्य किसान समृद्धि सह योजना का अनुमोदन प्रदान किया है। इस योजना के तहत मुख्यत: उन्नत सेवा प्रदान करने के लिए नेशनल फिशरीज डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से मछुआरों, मत्स्य पालक किसान, मत्स्य विक्रेताओं, प्रसंस्करण कर्ताओं और मत्स्य पालन क्षेत्र से जुड़े अन्य व्यवसायियों को कार्य आधारित पहचान पत्र देकर मत्स्य उद्योग मत्स्य उत्पादन के असंगठित क्षेत्र को क्रमिक रूप से व्यवस्थित कर संगठित किया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत मत्स्य पालन के क्षेत्र में स्रिय सूक्ष्म और लघु उद्योगों को एक संस्थागत आर्थिक सहायता प्रदान करने की प्रिया को सरल और सुगम बनाया जाएगा। जल कृषि बीमा की खरीदी पर मत्स्य उत्पादन के एक च्र की पूर्ति पर एक बार प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की जाएगी, इससे रोजगार के नए अवसरों का सृजन होगा तथा रोजगार के इन्हीं अवसरों को बनाए रखने के लिए जल कृषि में वृद्धि होगी। लोग मत्स्य पालन के लिए प्रोत्साहित होंगे और इस योजना का मुख्य उद्देश्य मत्स्य पालकों को प्रोत्साहित करना ही है।

मत्स्य पालन उद्योग को सुव्यवस्थित करने के लिए नेशनल फिशरीज डिजिटल प्लेटफॉर्म का सृजन किया जाएगा जिससे सभी मत्स्य पालक हितग्राहियों को इस पर अपना पंजीयन करने के लिए प्रेरित किया जाएगा। पंजीकरण के अलावा प्रधानमंत्री मत्स्य किसान समृद्धि सह योजना के माध्यम से विभिन्न कार्यों की भी पूर्ति की जाएगी, जिसके अंतर्गत मत्स्य किसानों को ऋण और बीमा सुविधा प्रदान की जाएगी। वित्तीय प्रोत्साहन दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त मत्स्य के क्षेत्र में सुधार, आर्थिक लेनदेन की बेहतर समझ के लिए मछुआरों और मत्स्य पालकों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। संस्थागत ऋण के लिए दस्तावेज को तैयार करने में सहायता प्रदान की जाएगी। साथ ही मौजूदा 5500 मत्स्य सहकारी समितियां को व्यवसाय योजना बनाने एवं आवश्यकता आधारित जरूरत और सलाह आदि के लिए प्रति सहकारी समिति 2 लाख रुपए तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

भारत सरकार ने मत्स्य उत्पादन में नुकसान की किसी भी तरह के रिस्क को कम करने के लिए बीमा कंपनियों को समुचित जल कृषि बीमा उत्पादों का सृजन करने और परियोजना की अवधि के दौरान कम से कम 1 लाख हेक्टर जलीय कृषि क्षेत्र को सुरक्षा प्रदान करने का लक्ष्य रखा है। इसके अंतर्गत जलीय कृषि बीमा उत्पादों का लाभ उठाने के बारे में प्रोत्साहित करने के अंतर्गत मत्स्य पालक इच्छुक किसानों को चार हेक्टेयर और उससे कम जल विस्तार क्षेत्र का विकास करने पर बीमा कवर प्रदान किया जाएगा साथ ही मत्स्य उत्पादन के एक चक्र के लिए एकमुश्त प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। इसके अंतर्गत जल विस्तार क्षेत्र को प्रति हेक्टेयर 25 हजार रुपए की राशि तथा प्रीमियम राशि की लागत का 40 प्रतिशत प्रदान किया जाएगा। एक मत्स्य किसान को अधिकतम चार हेक्टेयर क्षेत्र तक देय प्रोत्साहन राशि के अंतर्गत 1 लाख रुपए की राशि प्रदान की जाएगी। साथ ही अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति और महिला मत्स्य लाभार्थियों को को सामान्य श्रेणी के लाभार्थियों को दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि की तुलना में 10 प्रतिशत अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी।

इस योजना के तहत सूक्ष्म उद्योगों के लिए कुल निवेश का अधिकतम 25 प्रतिशत अथवा 35 लाख रुपए जो भी कम हो प्रदान किया जाएगा जबकि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति और महिला स्वामित्व वाले सूक्ष्म उद्योगों को कुल निवेश का अधिकतम 35 प्रतिशत अथवा 45 लाख रुपए जो भी कम हो दिया जाएगा इसके अतिरिक्त ग्राम स्तरीय संगठनों और स्वयं सहायता समूह किसान उत्पादक संघो तथा सहकारी समितियों के संघो को कार्य निष्पादन अनुदान कुल निवेश का अधिकतम 35 प्रतिशत अथवा 200 लाख रुपए जो भी कम हो दिया जाएगा। सृजित अवसर और बनाए रखे गए वैकल्पिक रोजगार के अवसरों की श्रृंखला में महिलाओं के लिए सृजित और बनाए रखे गए प्रत्येक वैतनिक रोजगार अवसर के लिए प्रतिवर्ष 15 हजार रुपए की राशि का भुगतान किया जाएगा। इसी प्रकार पुरुषों के लिए सृजित और बनाए रखे गए वैतनिक रोजगार के प्रत्येक अवसर के लिए प्रतिवर्ष 10 हजार रुपए की राशि का भुगतान किया जाएगा। इस योजना का मुख्य उद्देश्य मत्स्य के क्षेत्र में पारंपरिक अनुदान से क्रमिक रूप से शिफ्ट होकर कार्य आधारित प्रोत्साहन को बढ़ावा देना है।

फाल्गुन माह बसंत ऋतु हेतु आहार परामर्श

- **डॉ. किंजल्क सी. सिंह** (वैज्ञानिक, कृषि विस्तार)
- **डॉ. चन्द्रजीत सिंह** (वैज्ञानिक, खाद्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी)
- **डॉ. अजय कुमार पांडेय** (प्रमुख केवीके)
- **डॉ. संजय सिंह** (वैज्ञानिक, कृषि विस्तार)
- **डॉ. मृत्युंजय कुमार मिश्रा** (कम्प्यूटर वैज्ञानिक)

कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा (म.प्र.)

आयुर्वेदिक के अनुसार पूरा वर्ष दो कालों में विभक्त है- प्रथम है आदान काल जिसमें शिशिर, बसंत और ग्रीष्म ऋतु आती हैं। इस काल में सूर्य भगवान उत्तरायण होकर प्रखर हो जाते हैं, वातावरण का तापमान अधिक हो जाता है। प्रकृति में नमी और शीतलता की कमी होने लगती है। मनुष्य का शारीरिक बल कम होने लगता है। शरीर में थकावट लगने लगती है, साथ ही जठराग्नि मंद होने लगती है। अतः इस काल में हल्के और कम चिकनाईयुक्त आहार का सेवन हितकर होता है।

वर्ष का द्वितीय काल है आदान काल जिसमें वर्षा ऋतु, शरद ऋतु और हेमंत ऋतु आती हैं। इस काल में सूर्य भगवान दक्षिणायन हो जाते हैं। इस काल में चंद्र भगवान बलवान हो जाते हैं। प्रकृति में रस भरने लगता है, नमी और शीतलता बढ़ने लगती है। जठराग्नि प्रबल होने लगती है। शारीरिक बल में भी वृद्धि होने लगती है। इस काल में स्निग्ध (चिकनाईयुक्त) और गुरु (गरिष्ठ) आहार के सेवन की अनुशंसा है। अभी वर्ष का आदान काल चल रहा है तथा बसंत ऋतु प्रारम्भ हो गई है। बसंत ऋतु में दो माह होते हैं, फाल्गुन और चैत्र। वर्तमान में फाल्गुन ऋतु प्रारम्भ हुई है। बसंत ऋतु के पूर्व शिशिर ऋतु में जो कफ प्रकृति में संचित हुआ है वह कफ बसंत ऋतु में वातावरण का तापमान बढ़ने के कारण पिघलता है जिसे प्रकृति में कफ प्रकुपित होने के नाम से जाना जाता है। स्वस्थ रहने के लिये तीनों दोषों का संतुलित होना आवश्यक है। आहार-विहार के निम्नलिखित नियमों का पालन कर कफदोष, जो कि बसंत ऋतु में प्रकुपित हुआ है, को संतुलित किया जा सकता है। प्रस्तुत लेख इसी विषय में प्रस्तुत है।

बसंत ऋतु हेतु आयुर्वेदिक आहारीय अनुशंसा

- बसंत ऋतु भी प्रारम्भ हो चुकी है। आयुर्वेद के अनुसार बसंत ऋतु में प्रकृति में त्रिदोषों में से कफदोष प्रकुपित होता है अतः बसंत ऋतु में षडरस में से तिक्त (तीखा जैसे मिर्च, अजवाईन, पीपली और सोंठ इत्यादि), कषाय (कड़वा जैसे नीम, करेला, मेथी, हल्दी, हरड़, लौकी, परवल और मूली इत्यादि) और कसैले रस (जैसे आंवला, जामुन, कच्चा अमरुद, कच्चा केला, छिलके मूंग दालें, छिलके वाली अरहर दाल) के आहार का ही सेवन करें।
- बसंत ऋतु में मीठे, नमकीन और खट्टे रस के आहार का सेवन नहीं करें।
- रात के समय ठंडी तासीर का आहार का सेवन नहीं करें जैसे रात को चावल का सेवन नहीं करें।
- ऋतु परिवर्तन का समय है (संधि काल) सूर्य भगवान की तपिश बढ़ रही है और हमारी जठराग्नि मंद होनी प्रारम्भ हो रही है अतः चिकनाई (जैसे अधिक तला हुआ आहार) युक्त तथा गुरु आहार (गरिष्ठ आहार जैसे मैदे, बेसन, खोवे और पनीर से बने व्यंजन) का सेवन नहीं करें, बल्कि हल्के आहार का सेवन प्रारम्भ करें।
- नये अनाज का सेवन नहीं करें। यदि नये अनाज का सेवन आवश्यक हो जाये तो पहले अनाज को हल्का भून लें फिर अनाज का उपयोग करें। इस ऋतु में गेहूं के अतिरिक्त ज्वार और बाजरे का सेवन भी किया जा सकता है।
- बसंत ऋतु में तले हुये खाद्य पदार्थ का सेवन कम करना है। इसके स्थान पर सेंके हुये, भुने हुये अथवा उबले हुये आहार का सेवन श्रेयस्कर है।
- प्रातः काल कड़वी नीम की कुछ कोमल नई पत्तियों के सेवन से कफ ठीक होता है।
- यदि कफ बन रहा जो तो शहद अथवा गुड़ का सेवन लाभकारी होता है। यह दोनों ही खाद्य पदार्थ औषधि का कार्य करते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार बसंत ऋतु हेतु पेय पदार्थ

- एक लीटर स्वच्छ जल को उबालकर ठंडा कर लें। इसमें आधे से एक चम्मच शहद मिला का सेवन करने से कफ नियंत्रित होता है। इस प्रकार दिन में लगभग चार चम्म्च तक शहद का उपयोग किया जा सकता है। ध्यान रखें कि शहद को कभी भी गर्म पानी के साथ उपयोग नहीं करें।
- यदि शहद का उपयोग नहीं करना है तो ऊपर दी गई विधि से स्वच्छ जल तैयार करें और शहद के स्थान पर दो चुटकी सोंठ मिश्रित कर सेवन कर सकते हैं। इस प्रकार के पानी से भी कफ को नियंत्रित किया जा सकता है तथा पाचन को भी दुरुस्त रखा जा सकता है।
- बसंत ऋतु में भैंस का दूध कतई न पीयें। गाय के दूध का सेवन भी कम करें। दूध के सेवन से कफ बनता है। फिर भी जब भी दूध पीयें तो गाय के दूध में हल्दी और सोंठ मिलाकर पीयें जिससे दूध पीने के बाद भी कफ नहीं बनेगा।
- इस ऋतु में दही का सेवन नहीं करें बल्कि आप मसाले वाले छाछ (छाछ में जीरा, हींग, अजवाईन और कढ़ी पत्ता मिलाकर) का उपयोग कर सकते हैं।

बसंत ऋतु हेतु पारस्परिक एवं अनुभवजन्य आहारीय अनुशंसा

- अनुभवजन्य एवं परम्परिक ज्ञान के अनुसार इस माह में चने, बेसन तथा इनसे बनने वाले व्यंजनों, खाद्य उत्पादों (नमकीन, पकौड़ा और ब्रैड पकौड़ा इत्यादि) के सेवन का निषेध है।
- बसंत ऋतु में प्रातः काल उठ कर स्नान करने की अनुशंसा है।

बसंत ऋतु हेतु आयुर्वेदिक विहारीय अनुशंसा

- बसंत ऋतु में प्रातः काल उठ कर व्यायाम, योग, प्राणायाम करें फिर उध्वर्तन (शरीर पर पिसी हल्दी, जौ का आटे, चने का आटे में तेल मिलाकर उबटन) कर गर्म स्वच्छ जल से स्नान करना चाहिये। जल में कड़वी नीम की कोमल पत्तियाँ मिलाकर स्नान करना भी त्वचा के स्वास्थ्य के लिये लाभकारी होता है।
- दिन में सोना नहीं चाहिये अन्यथा कफ बढ़ेगा।

बसंत काल हेतु आयुर्वेद के अनुसार पंच कर्म

बसंत काल हेतु श्रेष्ठ पंच कर्म वमन क्रिया है जिससे कफ को नियंत्रित किया जा सकता है, किंतु इस क्रिया को कुशल आयुर्वेदिक चिकित्सक के मार्गदर्शन में ही करना चाहिये।

संदर्भ

- वागभट्ट ऋषि द्वारा लिखित अष्टांग हृदय, सूत्रस्थान का तीसरा अध्याय, ऋतुचर्या अध्याय।
- ऋषि चरक द्वारा लिखित चरक संहिता सूत्र स्थान का छंठवा अध्याय, त्स्याशितीय अध्याय।
- Youtube/ayurvedaforevery-one.com
- Youtube/easyayurveda.com
- https://www.banyanbotanicals.com/
- https://www.ayurvedakendra.in/discover-ayurveda/the-theory-of-ayurveda/ritucharya/
- Youtube/ojayurveda

नैनो यूरिया और डीएपी का प्रक्षेत्र दिवस आयोजित

रीवा। रायपुर कल्चुरीयान ब्लॉक के ग्राम मैथौरी में डॉ. डी.के. सोलंकी, राज्य विपणन प्रबंधक इफको भोपाल के मुख्य आतिथ्य तथा डॉ. राजेश सिंह (कृषि वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र रीवा) की अध्यक्षता में इफको रीवा द्वारा प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. अखिलेश पटेल (मृदा वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केंद्र रीवा), राकेश अग्निहोत्री (वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, रायपुर कलचुरियान विकासखंड), शिवेंद्र सिंह (कृषि विस्तार अधिकारी), सुरेन्द्र पाल सिंह क्षेत्रीय अधिकारी इफको रीवा सहित ग्राम मिथौरा के 40 से अधिक प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में डॉ. सोलंकी ने इफको के बारे जानकारी देते हुए सभी किसान भाइयों को इफको के नवीन उत्पाद- इफको नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी के फसल उत्पादन में उपयोग, महत्व एवं होने वाले फायदों के बारे में विस्तार से जानकारी दी एवं इफको के द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न उन्नयन कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया। प्रक्षेत्र दिवस के अवसर पर नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी के प्रदर्शन के परिणाम के बारे में किसानों को समझाया। डॉ. राजेश सिंह के द्वारा किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। डॉ अखिलेश पटेल के द्वारा सभी किसानों को मृदा स्वास्थ्य परीक्षण, मृदा उर्वरकता एवं मृदा में जैविक कार्बन के महत्व के बारे में बताया गया। राकेश अग्निहोत्री द्वारा कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं के बारे में एवं खेती में नैनो उर्वरकों के उपयोग को कैसे बढ़ाया जाए तथा कृषि में किसानों से अपनी मिट्टी को उपजाऊ बनाए रखने के लिए नवीन तकनीकी एवं नवीनतम आदानों का सही समय और उचित मात्रा में उपयोग करने के बारे में बताया। डॉ. सोलंकी द्वारा नैनो उर्वरकों के परिणामों से अवगत कराया।

कृषक प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन

भोपाल। इफको, भोपाल एवं कृषि संकाय, रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय कृषक प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन कृषि संकाय के प्रमुख डॉ. अशोक कुमार वर्मा द्वारा किया गया, जिन्होंने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की योजना एवं उद्देश्य पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ऋषिकेश मंडलोई, सहायक प्राध्यापक, कृषि संकाय द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में इफको, भोपाल के उप प्रबंधक संतोष रघुवंशी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की महत्ता को रेखांकित करते हुए ईटखेड़ी स्थित अनुसंधान केंद्र तथा अन्य नर्सरियों के भ्रमण की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण में विभिन्न जिलों सीहोर, नर्मदापुरम, रायसेन, बैतूल आदि से कृषकों ने भाग लिया। इफको, भोपाल के राज्य विपणन प्रबंधक डॉ. डी. के. सोलंकी ने फसलों में पोषक तत्वों की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि फसलों को 17 आवश्यक पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है, किंतु किसान प्रायः केवल एनपीके उर्वरकों का ही प्रयोग करते हैं। उन्होंने संतुलित उर्वरक प्रयोग, नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी के उपयोग की सलाह दी। डॉ. अदिति चतुर्वेदी वत्स प्रो. चांसलर, रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय ने कृषि समुदाय में कृषि की भूमिका पर प्रकाश डाला तथा कृषि संकाय में उपलब्ध सुविधाओं कृषि अनुसंधान केंद्र, पॉलीहाउस, जैविक उत्पादन प्रणाली तथा जैविक प्रमाणित 8 एकड़ खेत के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कृषि संकाय, रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय को आईसीएआर, नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त है एवं विश्वविद्यालय में नवाचार हेतु अटल इनक्यूबेशन सेंटर संचालित किया जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विशेषज्ञों ने किसानों को महत्वपूर्ण जानकारी दी। कृषि महाविद्यालय, सीहोर के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. राजेश वर्मा ने फसलों में एकीकृत कीट प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। उन्होंने चना, अरहर, गेहूं, धान, मक्का आदि फसलों में लगने वाले विभिन्न कीट और रोगों की पहचान एवं उनके नियंत्रण के उपायों के बारे में बताया। इफको भोपाल के उप प्रबंधक संतोष रघुवंशी ने इफको के विभिन्न उत्पादों पर जानकारी दी। उन्होंने विशेष रूप से नैनो यूरिया और नैनो डीएपी उर्वरकों पर जोर दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने उर्वरकों के प्रयोग की विधियों, बीज उपचार तकनीकों तथा इफको द्वारा शुरू किए गए किसान संकट निवारण कार्यक्रम और ड्रोन तकनीक के उपयोग के बारे में बताया।

दलहन दिवस कार्यक्रम का आयोजन

भोपाल। रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल के कृषि संकाय द्वारा विश्व दलहन दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कृषि विशेषज्ञों, शिक्षकों, विद्यार्थियों और सहायक कर्मचारियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर कृषि संकाय के प्रमुख डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने दलहन फसलों के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि दलहन मानव आहार का महत्वपूर्ण हिस्सा है और प्रोटीन का प्रमुख स्रोत होने के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में भी सहायक होते हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ऋषिकेश मंडलोई, सहायक प्राध्यापक, कृषि संकाय ने किया। इस दौरान डॉ. आशीष श्रीवास्तव, सहायक प्राध्यापक, कृषि महाविद्यालय (जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर), गंजबसोदा ने विशेषज्ञ व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि दलहन न केवल पोषण मूल्य में समृद्ध होते हैं, बल्कि पर्यावरणीय स्थिरता बनाए रखने में भी योगदान देते हैं। किसानों को दलहन फसलों की उन्नत किस्मों को अपनाने और सतत कृषि तकनीकों का उपयोग करने की सलाह दी गई। उन्होंने बताया कि दलहन फसलें वायुमंडल से नाइट्रोजन को स्थिर कर मिट्टी की उर्वरता बनाए रखती हैं, जिससे रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम होती है। मध्य प्रदेश के कृषि जलवायु क्षेत्र के अनुसार किसानों को कीट प्रतिरोधी अरहर और चना की उन्नत किस्मों को अपनाने की सलाह दी गई। उन्होंने एकीकृत कीट प्रबंधन और एकीकृत रोग प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने इस तरह के जागरूकता कार्यक्रमों को भविष्य में भी जारी रखने की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि कृषि के क्षेत्र में नई तकनीकों और सतत विकास को बढ़ावा दिया जा सके। यह कार्यक्रम किसानों और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक और उपयोगी रहा।

आंवला के मूल्य संवर्धित उत्पादों से पोषण

मुरैना। कृषि विज्ञान केन्द्र, मुरैना में न्यूट्री स्मार्ट विलेज परियोजनान्तर्गत ग्रामीण महिलाओं हेतु प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में ग्रामीण महिला कृषक एवं युवतियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण का उद्देश्य ग्रामीण महिला कृषक एवं युवतियों को पोषण एवं स्वरोजगार के प्रति अभिप्रेरित करना है। कार्यक्रम के दौरान केन्द्र प्रमुख डॉ. प्रशान्त कुमार गुप्ता द्वारा ग्रामीण महिला कृषक एवं युवतियों को आंवला के मूल्य संवर्धित उत्पादों से पोषण के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने आंवला से बनने वाले उत्पादों को बढ़ावा देने की बात कही।

प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न विषय विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न आयामों पर सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक तौर कार्यक्रम में अन्य वैज्ञानिकगण डॉ. अशोक सिंह यादव, डॉ. प्रवीण कुमार सिंह गुर्जर, डॉ. बी.एस. कंसाना, रीना शर्मा, अर्चना द्वारा आंवला से बनने वाले कई प्रकार के पोषक तत्वों से भरपूर उत्पाद तैयार करने की विधि बताई गई। विषय विशेषज्ञ द्वारा तैयार उत्पाद आंवला मुरब्बा, आंवला कैंडी, आंवला सुपारी आदि पर विस्तृत रूप से सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी गई।

स्वच्छता अभियान और सहकारिता के प्रचार-प्रसार के कार्यक्रम आयोजित

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025

नर्मदापुरम। अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के उपलक्ष्य में सहकारिता विभाग के निर्देश पर जिले भर में विभिन्न सहकारी सोसाइटीज और कार्यालयों में स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता और सहकारिता के प्रचार-प्रसार के कार्यक्रम आयोजित किए गए। उपायुक्त सहकारिता कार्यालय, जिला सहकारी बैंक मुख्यालय एवं सभी सहकारी शाखाओं में कर्मचारियों ने मिलकर स्वच्छता अभियान की शुरुआत की।

इस अभियान के अंतर्गत कर्मचारियों ने कार्यालयों और सहकारी सोसाइटीज में साफ-सफाई, रंग रोगन, रिकॉर्ड को व्यवस्थित करने और बस्तों में बांधने का कार्य किया। इसके अलावा, स्वच्छता रैली का आयोजन किया गया, जिसमें सहकारी गीत गाकर लोगों को जागरूक किया गया।

सिवनी मालवा के कर्मचारियों ने रैली निकालकर सहकारिता का प्रचार भी किया। सहकारी सोसाइटीज की शाखाओं पैक्स भमेडी, सेमरी खुर्द, गुनौरा, सेमरीहरचंद, खापरखेड़ा, सांडिया, विपणन बानापुरा में इस कार्यक्रम को उत्साहपूर्वक आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों ने ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारिता के महत्व को उजागर किया और समाज में इसके प्रति जागरूकता बढ़ाई।

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के तहत आगामी वर्षभर में कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य सहकारी सोसाइटीज को और मजबूत करना, बंद पड़ी सोसाइटीज को पुनः सक्रिय करना या उन्हें परिसमापन कर समाप्त करना है। इसके साथ ही, नवीन क्षेत्रों जैसे सौर ऊर्जा, आईटी, और पर्यटन में नई सोसाइटीज का गठन किया जाएगा। इस दिशा में कलेक्टर सोनिया मीना के मार्गदर्शन में डोकरीखेडा में एक पर्यटन सोसाइटी का गठन किया गया है, जो बोटिंग जैसी पर्यटन गतिविधियां संचालित करेगी। इसके अलावा, सभी सोसाइटीज का गठन अब पूरी तरह से आईसीएमआईएस पोर्टल पर ऑनलाइन किया जाएगा, जिससे प्रक्रिया और अधिक पारदर्शी और सहज होगी।

तीन दिवसीय कृषक प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम

ग्वालियर। कृषि विज्ञान केन्द्र ग्वालियर में तीन दिवसीय कृषक प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम इफको के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम में आर.एस. शाक्यवार उप संचालक कृषि तथा विशेष अतिथि डॉ एस.एस. कुशवाहा वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र ग्वालियर, डॉ. राजीव चौहान वरिष्ठ वैज्ञानिक ग्वालियर, डॉ. श्रीवास्तव वरिष्ठ वैज्ञानिक ग्वालियर एवं श्री बिसोरिया वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी ग्वालियर सहित ग्वालियर एवं चंबल संभाग के 40 प्रगतिशील किसान भाइयों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में श्री शाक्यवार द्वारा सभी किसान भाइयों को कृषक प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम जानकारियां दी गई जिसे उन्होंने अपने गांव जाकर अपनाने इसका प्रचार-प्रसार करने का सुझाव दिया, जिससे अन्य किसानों को भी इसका फायदा पहुँचे। साथ ही किसानों को नैनो उर्वरकों के उपयोग की सलाह दी। डॉ. कुशवाहा वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा सभी किसान भाइयों को नई तकनीकी अपनाते हुए खेती को लाभ का धंधा बनाने के लिये नैनो यूरिया, नैनो डीएपी, नैनो जिंक के उपयोग करने की सलाह दी। आर.के. महोलिया क्षेत्र प्रबंधक इफको ग्वालियर द्वारा सभी किसान भाइयों आभार व्यक्त किया गया।

सहकारी विक्रेता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

सतना। सहकारी विक्रेता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उप महाप्रबंधक इफको सतना डॉ. देवेंद्र सिंह थे। कार्यक्रम में आईएफएफडीसी उर्वरक बिक्री केंद्र प्रभारी सतना और पन्ना जिला, तथा इफको बाजार केंद्र और एसएफए सतना उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में इफको नैनो उर्वरक और अन्य उत्पाद की बिक्री योजना के साथ इफको की व्यावसायिक गतिविधियां, इफको एमसी के कृषि रसायन के बीज व्यवसाय की चर्चा की गई।। उपमहाप्रबंधक इफको सतना डॉ. देवेंद्र सिंह द्वारा सभी बिक्री केंद्रों से उर्वरक के साथ अन्य उत्पाद की बिक्री बढ़ाने तथा सहकारी मूल्यों को दृष्टिगत रखते हुए कृषक हित में कार्य करने की सलाह दी तथा इफको सतना में सभी केंद्रों से सहयोग करते रहने का आग्रह किया जिससे जिले में इफको नैनो उर्वरकों का वितरण आसानी से किया जा सके।

(पृष्ठ 7 का शेष...)

पत्ता और फूल गोभी...

- कॉपर ओक्सीक्लोराइड की (0.25 प्रतिशत) 250 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी से ड्रेंचिंग करें।
- 10 से 12.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की मात्रा में ब्लीचिंग पाउडर का उपयोग करने से रोग को नियंत्रित किया जा सकता है।

सफेद रस्ट

लक्षण

- पत्तियों, तनों और फूलों की निचली सतह पर सफेद, चमकदार उभरे हुए छाले (फुंसियां) दिखाई देते हैं।
- फुंसियां आपस में मिलकर अनियमित पैच बनाती हैं।
- एपिडर्मिस फट जाता है और सफेद बीजाणु द्रव्यमान प्रकट होता है जो फुंसी को पाउडर जैसा रूप देता है।
- पौधे पहचान से परे विकृत हो जाते हैं।

अनुकूल परिस्थितियां

- सापेक्ष आर्द्रता 90 प्रतिशत से ज्यादा हो तो यह रोग होने के आसार काफी बढ़ जाते हैं।
- उच्च मृदा नमी भी एक कारण है।
- बार-बार बारिश का होना भी एक इस रोग के लिए अनुकूल परिस्थिति है।

नियंत्रण

- खेत में अत्यधिक नमी से बचें क्योंकि यह रोग के प्रसार को बढ़ाता है।
- ब्रासिका परिवार की फसलों को बार-बार न उगाएं। अन्य फसलों को चक्र में शामिल करें।
- प्रमाणित और रोग-मुक्त बीज का उपयोग करें।
- बीज को बोने से पहले थिरम 75 डब्ल्यूपी 2-3 ग्राम प्रति किलो बीज जैसे फफूंदनाशकों से उपचारित करें।
- मैंकोजेब (64 प्रतिशत)+मेटालेक्जिल (8 प्रतिशत) का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।
- प्रोपिकोनाजोल 25 ईसी का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।
- त्रिकोडेर्मा विरिडी या सयूदोमोनस जैसे जैविक एजेंट का उपयोग रोग के प्रबंधन में सहायक हो सकता है।
- सफेद रस्ट ठंडे और नम वातावरण में अधिक फैलता है। इसलिए फसल के मौसम और तापमान पर ध्यान दें।

अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा

लक्षण

- धब्बे छोटे, गहरे रंग के होते हैं। वे बड़े हो कर गोलाकार और 1 मिमी व्यास के हो जाते हैं।
- आर्द्र परिस्थितियों में कोनिडीओफोर के समूह उस स्थान पर बन कर संकेन्द्रित वलय विकसित करते हैं।
- अंततः धब्बे आपस में मिल जाते हैं, जिससे पत्तियां झुलस जाती हैं।
- यह कवक बीज जनित है और बीजों के सिकुड़ने तथा खराब अंकुरण का कारण बनता है।
- रेखीय धब्बे डंठलों, तनों, फलियों और बीजों पर भी दिखाई देते हैं।

अनुकूल परिस्थितियां

- मिट्टी का तापमान लगभग 28 डिग्री सेल्सियस हो तो यह रोग आ सकता है।
- उच्च आर्द्रता या लगातार ओस भी एक कारण हो सकता है।
- रुक-रुक कर बारिश के साथ नम मौसम भी एक परिस्थिति है।

नियंत्रण

- मेन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर का छिड़काव करें। ▶ 1 प्रतिशत बोरडेक्स मिश्रण या 2 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड या 2.5 ग्राम जिनेब को प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से पत्ती के धब्बों पर प्रभावी नियंत्रण होता है। ▶ डाइफेनोकॉनेजोल 25 प्रतिशत ईसी का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।
- जैविक फफूंदनाशक जैसे नीम आयल का उपयोग

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

उमरिया में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री कल्पेश कुमार सरावगी
मे. सरावगी ट्रेडर्स
संजय मार्केट, उमरिया
जिला-उमरिया (म.प्र.)
मो. 9425181347

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

★औषधीय★वन ★सब्जी★फूल★बीज★स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ★कीटनाशक ★ जैविक खाद ★ गार्डन टूल ★ जैविक उत्पाद ★ ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
वितरक - ★ निर्मल सीड्स, जलगांव ★ कलश सीड्स, जालाना ★ अंकुर सीड्स, नागपुर ★ वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ★ दिनाकर सीड्स, गुजरात ★ सटिंड सीड्स, दिल्ली ★ फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ★ स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ★ जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ★ स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ★ अनु प्रोडक्ट्स लि. ★ श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

अर्जुन इण्डस्ट्रीज
AN ISO 9001:2015 QMS CERTIFIED INDUSTRIES
समस्त कृषि यंत्रों के निर्माता एवं विक्रेता
• ट्राली • टेंकर • कल्टीवेटर • बोनी मशीन • पल्टीप्लाऊ

लाम्बाखेड़ा ओवरब्रिज, बायपास चौराहा, बैरसिया रोड, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9826097991, 9826015664, 9981415744

केव्हीके में फाइलेरिया रोधी सामूहिक दवा सेवन अभियान कार्यक्रम का आयोजन

टीकमगढ़। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण केंद्र के तारतम्य मे कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ में प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ, वीरेन्द्र सिंह किरार के मार्गदर्शन में जिला स्वास्थ्य समिति टीकमगढ़/निवाड़ी के सहयोग से डॉ. सतेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक (मात्स्यिकी) के नेतृत्व में फाइलेरिया रोधी सामूहिक दवा सेवन अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य जिले में फाइलेरिया के प्रसार को रोकना और समाज को इस गंभीर बीमारी से सुरक्षित करना है। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों, और स्थानीय किसानों ने भाग लिया। इस अवसर पर फाइलेरिया बीमारी के बारे में जागरूकता फैलाई गई और दवा सेवन के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

केंद्र के डॉ. सतेंद्र कुमार ने कहा कि फाइलेरिया संक्रमित मादा क्यूलेक्स मच्छर के काटने से होने वाला एक संक्रामक रोग है। इस बीमारी से बचने के लिए सामूहिक दवा सेवन कायक्रम में भाग लेना और नियमित रूप से दवा का सेवन करना आवश्यक है। केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. आर.के. प्रजापति ने बताया कि फाइलेरिया रोकने के लिए अपने आसपास साफ-सफाई रखें एवं गंदे पानी का भराव न होने दें तथा सैप्टिक टैंक की मुहाने पर जाली लगायें।

स्वास्थ्य विभाग के डा. रावत जिला स्वास्थ्य समिति जिला टीकमगढ़/निवाड़ी ने बताया कि जिले के प्रभावित हाई रिस्क क्षेत्र में फाइलेरिया नियंत्रण के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि सामूहिक दवा सेवन कार्यक्रम के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को दवा खिलाने का लक्ष्य रखा गया है। डा. सुनील कटियार, जिला समन्वयक जन अभियान परिषद, टीकमगढ़ ने बताया कि यह दवा सुरक्षित और प्रभावी है और इसका कोई गंभीर दुष्प्रभाव नहीं होता है। फाइलेरिया के लक्षण हाथ और पैर की सूजन, अण्डकोष का सूजन, स्तन ग्रांथियों में सूजन, त्वचा का लाल होना और हल्का बुखार आना है।

श्री अन्न बीज भंडार का लोकार्पण

रीवा। कृषि महाविद्यालय रीवा के अंतर्गत नव निर्मित कन्या छात्रावास एवं श्री अन्न बीज भंडार केंद्र का लोकार्पण उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ला द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जनार्दन मिश्रा सांसद रीवा विशिष्ट अतिथि एवं प्रो प्रमोद कुमार मिश्रा कुलपति, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस अवसर पर सांसद श्री मिश्रा ने कहा कि श्रीअन्न बीज भंडार के बनने से लघु धान्य की बीजों की उपलब्धता किसानों को होगी साथ ही उन्होंने महाविद्यालय के कुठलिया फार्म की रोड बनवाने का आश्वासन दिया जिससे कृषकों को आने-जाने में सुविधा मिले।

कुलपति डॉ. मिश्रा ने कहा कि कन्या छात्रावास का लोकार्पण होने से छात्राओं को सुविधा मिलेगी। इस अवसर पर महाविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित पुस्तकों का उप मुख्यमंत्री एवं सांसद द्वारा विमोचन किया गया। इस अवसर पर कृषि संकाय प्रमुख डॉ. धीरेन्द्र खरे, निदेशक शोध सेवाएं डॉ. जी.के. कोतू , निदेशक फार्म डॉ. अनीता बब्बर, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के साथ-साथ प्राध्यापकगण, छात्र-छात्राएं व रीवा के प्रगतिशील कृषक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान प्रमुख रूप से डॉ. बी.एम. मौर्य, डॉ. आर.पी. जोशी, डॉ, वी.के. सिंह, डॉ. के.सी. सिंह, डॉ. टी.के. सिंह, डॉ. बी.के. तिवारी, डॉ. अखिलेश कुमार, डॉ. मनीषा द्विवेदी, डॉ. राधा सिंह, डॉ. ए.के. गिरी, डॉ. प्रदीप मिश्रा, डॉ. के.एस. बघेल, डॉ. दिव्या सिंह, डॉ. सुधांशु पांडेय, हरीश द्विवेदी एवं छत्रसाल पांडेय उपस्थित रहे।

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक
एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी,मानसरोवर कॉम्पलेक्स,हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

कृषक दूत मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16,ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्यता फार्म
कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक
एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी,मानसरोवर कॉम्पलेक्स,हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम...

संस्था का नाम...

पूरा पता...

ग्राम....................पोस्ट....................तहसील....................

जिला....................राज्य....................पिन कोड

दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र " कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में)...................... (शब्दों में)......................

बैंक का नाम...................... ड्राफ्ट चेक क्रमांक......................

दिनांक...................... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान...................... प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक...................... एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

कृषि यंत्रीकरण अपनाने से होगा बेहतर कृषि विकास : डॉ. झा

केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान का 50वां स्थापना दिवस आयोजित

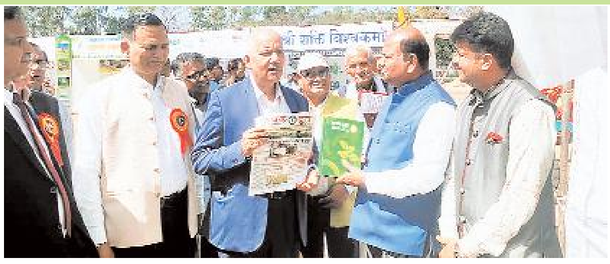

भारतीय कृषि अनसंधान परिषद के उप महानिदेशक डॉ. एस.एन. झा (बायें से दूसरे) कृषक दूत के प्रधान संपादक अमरेन्द्र मिश्रा से कृषि विकास के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते हुये।

भोपाल। वर्तमान में कृषि जोत छोटी होने तथा मजदूरों की समस्या बढ़ने से कृषि यंत्रीकरण शत-प्रतिशत अपनाना आवश्यक हो गया है। केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान इस दिशा में नित नई तकनीक अपनाकर आधुनिक कृषि यंत्र विकसित कर रहा है इसलिए इस संस्थान को यंत्र निर्माण का मक्का-मदीना कहना गलत नहीं होगा। यह विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (कृषि अभियांत्रिकी) डॉ. एस.एन. झा ने केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान भोपाल के 50वें स्थापना दिवस पर आयोजित स्वर्ण जयंती समारोह में व्यक्त किया।

डॉ. झा ने कहा कि 50 वर्षों में बहुत कुछ बदला परन्तु अभी भी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। मशीनीकरण से ही कृषि क्षेत्र को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकते हैं। इसके पूर्व सीआईएई के निदेशक डॉ. सी.आर. मेहता ने 50 वर्षों के सफर का वृतांत बताते हुए संस्थान में किए जा रहे नए कृषि यंत्र निर्माण की जानकारी दी।

आईसीएआर के पूर्व उप महानिदेशक डॉ. नवाब अली ने कहा कि कृषि यंत्रीकरण की शुरुआत अमेरिका में 1907 में हुई जबकि भारत में प्रयागराज स्थित कृषि अभियांत्रिकी संस्थान में 1942 से कृषि इंजीनियरिंग की डिग्री देना प्रारंभ किया गया। उन्होंने कहा कि यंत्रीकरण से ही पैदावार बढ़ाई जा सकती है। सीआईएई का कृषि यंत्रीकरण में अहम् योगदान है। आईसीएआर के सहायक निदेशक डॉ. के.पी. सिंह ने कहा कि सीआईएई जैसे संस्थान की उपयोगिता तब बढ़ जाती है जब कोई किसान नई तकनीक से निर्मित यंत्रों का उपयोग कर उससे उत्पादकता वृद्धि करता है।

स्थापना दिवस समारोह को सीआईएई के पूर्व निदेशक डॉ. आर.पी. काचरु, केन्द्रीय फार्म मशीनरी संस्थान बुदनी के निदेशक डॉ. पी.पी. राव, कृषि अभियांत्रिकी संचालनालय भोपाल के संचालक पवन सिंह श्याम, भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. एस.पी. दत्ता, उच्च सुरक्षा पशुरोग प्रयोगशाला भोपाल के निदेशक डॉ. ए.के. सन्याल एवं कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र मुम्बई के निदेशक डॉ. एस.के. शुक्ला ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, प्रगतिशील कृषकों को भी सम्मानित किया गया। इस मौके पर कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया है जिसमें कृषि आदान सामग्री सहित प्रदेश के कई प्रमख कृषि यंत्र निर्माताओं ने अपने यंत्रों का प्रदर्शन किया। कृषि प्रदर्शनी में प्रमुख रूप से विश्वकर्मा एग्रो इण्डस्ट्रीज बरेली, प्रकाश एग्रो भोपाल, लालवानी इण्डस्ट्रीज भोपाल, भारत कृषि यंत्र विदिशा, विदिशा विनोवर फैक्ट्री विदिशा, विनायक ट्रैक्टर्स, भोपाल इत्यादि शामिल हैं।

आरएनटीयू कैडेट हीरालाल को स्पेशल अवॉर्ड

भोपाल। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के लिए गर्व का क्षण तब आया जब दो एनसीसी नेवल विंग कैडेट्स ने कर्तव्य पथ, नई दिल्ली में आयोजित प्रतिष्ठित गणतंत्र दिवस परेड (आरडीसी) 2025 में हिस्सा लिया और विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया। अपने शानदार प्रदर्शन के बाद लौटने पर विश्वविद्यालय परिसर में उनका भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर एआईसी-आरएनटीयू और आईक्यूएसी के निदेशक नितिन वत्स, प्रो-वाइस चांसलर डॉ. संजीव गुप्ता, रजिस्ट्रार डॉ. संगीता जौहरी, एनसीसी अधिकारी सब लेफ्टिनेंट मनोज सिंह मनराल, एनसीसी इंस्ट्रक्टर दुर्गा वर्मा सहित विश्वविद्यालय के पदाधिकारीगण और साथी छात्र उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय परिवार ने कैडेट्स को फूल मालाओं से सम्मानित किया और उनके साहस, समर्पण और अनुशासन की सराहना की।

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स ने गणतंत्र दिवस कैंप के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। लगभग छह महीने के कठिन प्रशिक्षण के बाद दिल्ली में कर्तव्य पथ पर शामिल कैडेट्स हीरालाल कुमार को बेस्ट इन ड्रिल के लिए स्पेशल अवॉर्ड से नवाजा गया वही पीओ कैडेट नीलेश साहू ने पीएम रैली में भाग लिया। दोनों ही कैडेट्स को प्रदेश वापस आने पर मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल तथा प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा मेडल देकर सम्मानित किया गया। एआईसी-आरएनटीयू और आईक्यूएसी के निदेशक नितिन वत्स, प्रो-वाइस चांसलर डॉ. संजीव गुप्ता ने कैडेट्स की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह हमारे विश्वविद्यालय के लिए अत्यंत गर्व का विषय है कि हमारे कैडेट्स ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा और अनुशासन का प्रदर्शन किया। यह उनकी मेहनत, लगन और प्रशिक्षण का परिणाम है।

सॉर्टेड सीमन का प्रयोग कर पशुओं की नस्ल सुधार करें

भोपाल। पशुपालन एवं डेयरी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल ने शनिवार को म.प्र. राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम के अन्तर्गत संचालित गोकुल ग्राम, पशु प्रजनन प्रक्षेत्र, रतोना, सागर का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सॉर्टेड सीमन का प्रयोग कर पशुओं की नस्ल सुधार एवं बछिया प्रजनन पर जोर दिया। निरीक्षण के दौरान राज्यमंत्री श्री पटेल ने निर्देश दिए कि प्रक्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाया जाए। इसके लिए प्रक्षेत्र की संपूर्ण भूमि का समुचित उपयोग हो, इस संबंध में विस्तृत कार्ययोजना बनाकर प्रस्तुत की जाए। साथ ही उच्च नस्ल के पशुओं को क्रय करने संबंधी कार्ययोजना भी प्रस्तुत करें। उन्होंने प्रक्षेत्र के आय-व्यय की समीक्षा भी की। प्रबंधक डॉ. आर.के. गौतम ने बताया कि प्रक्षेत्र 500 एकड़ क्षेत्र में फैला है, जिसमें से 200 एकड़ कृषि योग्य और 200 एकड़ बीड़ एरिया हैं। शेष में अधोसंरचना एवं पशु चारागाह स्थित है। तरल नाइट्रोजन संयंत्र प्रबंधक डॉ. डी.डी. चढ़ार को गोबर गैस संयंत्र से गैस उत्पादन के संबंध में निर्देशित किया गया। राज्यमंत्री श्री पटेल द्वारा प्रक्षेत्र पर कार्यरत श्रमिकों को समय पर वेतन भुगतान के निर्देश दिये।

कृषि संचालनालय के के.के श्रीवास्तव का आकस्मिक निधन

भोपाल। कृषि संचालनालय भोपाल की पौध संरक्षण शाखा में पदस्थ रहे श्री के.के. श्रीवास्तव कृषि विस्तार अधिकारी का विगत दिनों आमस्मिक निधन हो गया। मृदुभाषी एवं सौम्य स्व. श्री श्रीवास्ताव के निधन से कृषि संचालनालय में शोक की लहर हैं। कृषक दूत परिवार मृतात्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करता है।

भारत का फूड बास्केट बन रहा मध्यप्रदेश

भोपाल। मध्यप्रदेश की उपजाऊ भूमि केवल भरपूर फसल ही नहीं, बल्कि नवाचार, सतत विकास और वैश्विक निवेश के नए द्वार भी खोल रही है। प्रदेश ने अपनी समृद्ध कृषि परंपरा और उन्नत कृषि तकनीकों के बल पर खुद को देश की फूड बास्केट के रूप में स्थापित किया है। राज्य को अब तक सात कृषि कर्मण पुरस्कार मिल चुके हैं, जो इसकी कृषि क्षेत्र में मजबूती को दर्शाते हैं।

मध्यप्रदेश में 'श्वेत क्रांति' तेजी से अपने पैर पसार रही है। राज्य में 2012 से 2023 के बीच दूध उत्पादन में जबरदस्त वृद्धि दर्ज की गई है। मध्यप्रदेश दूध उत्पादन और उपलब्धता में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी स्थिति लगातार मजबूत कर रहा है। प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम योजना के तहत क्रेडिट-लिंक्ड सब्सिडी से खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को आर्थिक सहायता मिल रही है, जिससे इस क्षेत्र में नए निवेश को बढ़ावा मिल रहा है। प्रदेश सरकार के प्रयासों से राज्य का खाद्य और डेयरी उद्योग नई ऊंचाइयों को छू रहा है। यह न केवल प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूती दे रहा है, बल्कि पूरे देश के डेयरी और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है।

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार

कृषक दूत

कैंसर से बचाव के लिए प्राकृतिक कृषि अपनाना जरूरी : डॉ. यादव

कृषकों को सोलर पम्प के लिए प्रोत्साहित करे जन अभियान परिषद

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जन-अभियान परिषद से जुड़े स्वयंसेवी संगठन, प्रस्फुटन समितियां और नवांकुर संस्थाएं कृषकों को ऊर्जा में आत्मनिर्भर बनाने के लिए सोलर पंप लगवाने के लिए प्रेरित करें। साथ ही किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से गौपालन को भी प्रोत्साहित किया जाए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में दोनों गतिविधियों को अभियान के रूप में संचालित करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र कैंसर जैसे घातक रोगों से निरंतर प्रभावित हो रहे हैं। अत: रासायनिक खाद और कीटनाशकों के बल पर ली जा रही उपज के खतरों से किसानों को अवगत करवाना आवश्यक है।

परिषद, किसानों को प्राकृतिक और अक्षय कृषि के लिए प्रोत्साहित करें। जन अभियान परिषद इन क्षेत्रों में कार्य कर ऊर्जा, जल और पर्यावरण संरक्षण, बेहतर स्वास्थ्य और कौशल विकास के क्षेत्र में योगदान दे सकती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मप्र जन अभियान परिषद की कार्यकारिणी सभा की 15वीं बैठक संपन्न हुई। बैठक में उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर, अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, मोहम्मद सुलेमान सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

कृषि विभाग के प्रशिक्षण किसानों के लिये लाभकारी : श्री कंषाना

भोपाल। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों से किसानों को अपनी फसलों की उपज में वृद्धि करने में मदद मिली है। इसके परिणामस्वरूप किसानों की आय में वृद्धि हो रही है। प्रशिक्षणों में किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों, फसल प्रबंधन और मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करने के तरीकों के बारे में जानकारी दी जा रही है। फसलों की उपज में औसतन 20 से 25 प्रतिशत की वृद्धि और गुणवत्ता में भी सुधार देखा गया है।

किसानों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों से अपनी फसलों की देखभाल करने के नए तरीके सीखने का अवसर मिल रहा है। अब वे अपनी फसलों को अधिक कुशलता से उगा सकते हैं और अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम निरंतर आयोजित होते रहेंगे। इन प्रशिक्षणों से किसानों को अपनी फसलों की उपज में वृद्धि करने और अपनी आय में सुधार करने में मदद मिलेगी।

कृषि विभाग द्वारा किसानों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। फसल उत्पादन प्रशिक्षण अंतर्गत किसानों को विभिन्न फसलों की उत्पादन तकनीकों के बारे में जानकारी दी जाती है। मिट्टी परीक्षण और उर्वरक प्रबंधन प्रशिक्षण में किसानों को मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करने और उर्वरकों का सही तरीके से उपयोग करने के तरीकों के बारे में जानकारी दी जाती है। सिंचाई प्रबंधन प्रशिक्षण में किसानों को सिंचाई के विभिन्न तरीकों और सिंचाई के लिए आवश्यक उपकरणों के बारे में जानकारी दी जाती है। कीट और रोग प्रबंधन प्रशिक्षण में किसानों को फसलों के कीटों और रोगों के प्रबंधन के तरीकों के बारे में जानकारी दी जाती है।

प्रमाणित बीज फसल उत्पादन बढ़ाने में कारगर : श्री कंषाना

भोपाल। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि बीज प्रमाणीकरण संस्था का गठन भारत सरकार द्वारा अधिसूचित बीज अधिनियम 1966 की धारा 8 के अन्तर्गत किया गया है। संस्था का मुख्य कार्य निर्धारित मानक के अनुरूप गुणवत्ता के बीजों का प्रमाणीकरण करना है। प्रमाणित बीजों से प्रदेश में फसलों की उत्पादकता बढ़ाई जा रही है। बीज प्रमाणीकरण संस्था द्वारा विगत एक वर्ष की अवधि में बीज प्रमाणीकरण का महत्वपूर्ण कार्य किया गया। खरीफ-2024 में 1.24 लाख हेक्टेयर क्षेत्र बीज प्रमाणीकरण के लिए पंजीकृत हुआ और 15 लाख क्विंटल बीज प्रमाणित किया गया। रबी सीजन में 1.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र बीज प्रमाणीकरण के लिए पंजीकृत हुआ और 21.86 लाख क्विंटल बीज प्रमाणित किया गया। ग्रीष्म-2024 में 9021 हेक्टेयर क्षेत्र बीज प्रमाणीकरण के लिए पंजीकृत हुआ और 85 हजार क्विंटल बीज प्रमाणित किया गया।

बीज प्रमाणीकरण संस्था के टैग्स पर 2डी क्यूआर कोड का उपयोग किया जा रहा है। किसी भी एन्ड्रॉयड फोन से इसे स्कैन किया जा सकता है। स्कैन करने पर प्रमाणित बीज लॉट के लिए जारी प्रमाण-पत्र खुल जायेगा, जिसमें बीज लॉट की समस्त जानकारी उपलब्ध है। फसल, किस्म, लॉट क्रमांक, टैगों की सीरीज, कुल कितने टैग जारी किये गये, पैकिंग साइज, पैकिंग मात्रा, बीज परीक्षण परिणाम, अंकुरण, भौतिक शुद्धता, अन्य फसलों, अन्य पहचान योग्य बीज, खरपतवार, नमी, किस कृषक एवं संस्था द्वारा बीज का उत्पादन किया गया और किस सहायक बीज प्रमाणीकरण अधिकारी द्वारा पैकिंग एवं टैगिंग की गई, समस्त जानकारी स्कैन के माध्यम से देखी जा सकती है। केन्द्र सरकार द्वारा तैयार किये गये साथी पोर्टल पर बीजोत्पादन कार्यक्रम और बीज का ट्रेसेबिलिटी ऑथेन्टिकेशन की जानकारी ली जा सकती है।

9860 करोड़ किसानों के खाते में अंतरित

भोपाल। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि विपणन वर्ष 2024-25 में धान उपार्जन के लिये 6 लाख 69 हजार किसानों से 43 लाख 52 हजार मीट्रिक टन धान का उपार्जन किया गया है। अभी तक 9860 करोड़ 66 लाख रूपये किसानों के बैंक खाते में भेज दिये गये हैं। उन्होंने बताया कि शेष राशि किसानों के खातों में भेजने की कार्यवाही जारी है।

कृषि मंत्री ने दी विश्व दलहन दिवस की शुभकामनाएं

भोपाल। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री एदल सिंह कंषाना ने प्रदेशवासियों को विश्व दलहन दिवस की शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा है कि विश्व दलहन दिवस तुअर, मूसर, चना, मटर, मूंग, उड़द आदि दालों के महत्व और फायदों को दर्शाता है। श्री कंषाना ने कहा कि स्वस्थ जीवन के लिए दालें बहुत लाभकारी होती हैं। दालों में प्रोटीन, फाइबर, आयरन, विटामिन और मिनरल सहित कई जरूरी पोषक तत्व मौजूद होते हैं। अपने भोजन में दालों का उपयोग करके जीवन शैली को स्वस्थ बनाया जा सकता है।